इक जोत सर्व व्यापक

तीन प्रतिज्ञाएं

जगदीश चन्द्र शर्मा
(साहित्य भूषण)

Kashmiri Pandit Sabha
JAMMU (Tawi)

इक जोत सर्व व्यापक

K. P. SABHA AMBPHALLA
LIBRARY
No.............
Date..........
JAMMU

तीन प्रतिज्ञाएं

जगदीश चन्द्र शर्मा
(साहित्य भूषण)

सर्वाधिकार सुरक्षित

★ उर्दू संस्करण : अक्तूबर 1952

★ हिन्दी संस्करण : अक्तूबर 1990

1100 प्रतियां

★ Cost Price : 4 रुपए

★ Subsidised Price : 2 रुपए

★ मिलने का पता :

सैक्रेटरी, रूहानी सत्संग प्रेम समाज (रजि.)
सत्संग घर (पंजाब नैशनल बैंक के साथ)
सलीम टाबरी, लुधियाना-141005

सैक्रेटरी रूहानी सत्संग प्रेम समाज (रजि.) लुधियाना ने जी.एस. प्रिण्टर्ज़, डॉ. गुज्जरमल रोड, लुधियाना-8 से छपवाकर प्रकाशित की।

प्रेम शरणम् गच्छामि
धर्म शरणम् गच्छामि
प्रभु शरणम् गच्छामि

रूहानी सत्संग प्रेम समाज में प्रार्थना के बाद प्रेमी भाई बहनों से ऊपर लिखे तीन अहद (प्रतिज्ञाएं) कहलवाए जाते हैं उनका जिक्र विस्तार से इस ट्रैक्ट में किया गया है। जो कोई भी इस ट्रैक्ट को गौर से पढ़ेगा उसको इन अहदों की हकीकत का पता चल जाएगा।

जगदीश चंद्र शर्मा

17.10.1952

प्रेम शरणम् गच्छामि

इस महंगाई और कैहत के ज़माने में एक चीज़ इस कदर सस्ती और आम है कि जिससे कोई गांव, कोई शहर, कोई सूबा और कोई मुलक खाली नहीं। दूध पीते बच्चे से लेकर सौ साला बूढ़े तक सब इस शै की ज्यादती से मालामाल हैं। ताअजुब यह कि यह बहुतात इन्सानों तक ही माहद्दूद नहीं बल्कि हर जानदार के पास ज्यादा से ज्यादा मिकदार में मौजूद है। इसकी अफरात यानी ज्यादती में कुदरत की जानिब से भी कोई रुकावट नहीं और हवा, पानी, आग से भी इसे कोई खतरा नहीं पहुंचता। आप हैरानी से सोचते होंगे कि ऐसी कौन सी चीज़ है जो हकूमत की निगाह से बच रही है जिस पर न कोई टैकस् है और न कंट्रोल। आजकल तो मिट्टी भी मूल्य से मिलती है और अकसर जगह पर पानी पर भी कंट्रोल है और राशन से दिया ज़ाता है। हां, एक चीज़ है जिसका कंट्रोल भी नहीं और राशन भी नहीं। वह है हवा लेकिन

कई बार हवा की भी कीमत अदा करनी पड़ती है। बरसात में बारिश के बाद जब हवा बंद हो जाती है तब आप कितने व्याकुल होकर कहते हैं कि लो अब हवा पर भी कंट्रोल हो गया। अब शायद इसका भी राशन हो जाए। तब वह कौन सी चीज़ रही जिसका मैं ज़िकर कर रहा था। शायद इस तरफ आपका ध्यान न जाए क्योंकि यह आम है। लो, मैं ही बतला देता हूं कि वह चीज़ क्या है जिसकी घर-घर शौहरत है जो बेहद सस्ती और आम है। सुनिए, वह चीज़ जिस पर आपको इस कदर मगज़ खर्च करना पड़ा "लड़ाई" है। ताअजुब न कीजिए बल्कि गौर कीजिए कि कोई जानदार इससे खाली है। चूहे आपस में लड़ते हैं, बिल्लियां आपस में लड़ती हैं, चिड़ियां आपस में लड़ती हैं, कौवे, कुत्ते, चील, हिरण, लूम्बड़, शेर, हाथी आपस में लड़ते हैं और तो और चींटीयां और मक्खीयां भी आपस में लड़ती हैं। इन्सानों की दुनिया में आईए। छोटे-छोटे बच्चे, जिन्हें दुनिया और इसके पदार्थों का ज़रा भी ज्ञान नहीं, मिट्टी के खिलौने पर ही आपस में लड़ते हैं। घरों में औरतें, मर्द, बूढ़े आपस में बात बात पर लड़ते और झगड़ते हैं। बाज़ार में जाकर देखो, दुकानों पर खरीदार और

दुकानदार झगड़ते मिलेंगे। होटलों पर जाओ, वहां सब्जी में नमक मिर्च की कमी पर तकरार हो रही होगी। कारखानों में मज़दूरों और मालिकों में बहस हो रही होगी। स्टेशन पर कुली और मुसाफिर झगड़ते मिलेंगे। धर्म सभाओं में भी, जहां अमन और शान्ति के सरमन दिए जाते हैं, प्रधान, सभा मंत्री और उपदेशक आपस में बहस और तकरार करते हुए मिलेंगे। विधान सभा (Assembly), लोक सभा (Parliament), जहां अमन कायम रखने के लिए कानून बनाए जाते हैं, कानून पेश करने वाले मैंबर आपस में लड़ते मिलेंगे। गर्ज़े जिधर नज़र पसारें, लड़ाई की आग नज़र आती है। ऐसे माहौल को देखकर शायद शायर ने लिखा है,

मसजिदों में, खानकाहों में, सनमखानों में आग
मरमरी महलों में, नूरानी शबस्तानों में आग
जगमगाते हैकलों में और ईवानों में आग
नजमों माह के दामनों में बिजलियां पलती हैं आज
कैसी-कैसी महफिलें उफ आग में जलती हैं आज।

इन्सान ने अपनी लड़ाई इन्सान तक ही माहदूद न रखकर ईश्वर के साथ भी लड़ाई शुरू कर दी है। इन्सान यह जानता हुआ भी कि उसे ज़िन्दगी और

मौत पर कोई अख्तयार नहीं, हवा और पानी प
उसकी मलकीयत नहीं, सूर्य और चाँद पर उसका हुक
नहीं चलता, फिर भी ऐलान किया है कि उनके बना
वाला कोई ईश्वर नहीं। आज का साईंसी इन्सान दा
करता है कि इन ज़मीनों और आसमानों में ईश्व
या प्रभु नाम की किसी हस्ती का कोई वजूद नहीं
अगर है तो हमारे सामने क्यों नहीं आता। हम कह
हैं कि अगर ईश्वर नाम की कोई हस्ती है तो मेज़ प
हमने जो खुश्क फूल रखे हैं, इनको आकर हरा कर दे
जब वो हमारे चैलेंज पर ऐसा नहीं कर सकता तब व
ज़िन्दा नहीं, मुर्दा है, सच्चा नहीं बल्कि फर्ज़ी खुदा है। य
है आज के इन्सानों की लड़ाई पसंद तबीयत क
सही खाका।

यह आग क्यों लगी ?

लड़ाईयां क्यों हो रही हैं ? झगड़े क्यों बढ़ र
हैं ? अब हमने इस बारे में सोचना है। न्याय शास्त्र
लिखा है कि कार्य बगैर कारण के नहीं होता। मसल
जब तक मिट्टी न हो, घड़ा नहीं बनेगा यानी घड़े क
कारण मिट्टी है। रोटी का कारण अनाज है, कुर्सी क
कारण लकड़ी है। जब तक मिट्टी, अनाज और लकड़ी

न हो, तब तक घड़ा, रोटी और कुर्सी तैयार न होगी। इस तरह जब तक लड़ाई का कोई कारण न हो, लड़ाई नहीं होगी। लड़ाई का कारण क्या है? आप भी सोचिए, मैं भी सोचता हूं। सोचने के बाद हम दोनों इस नतीजे पर पहुंचेंगे कि लड़ाई का एक ही कारण है और वह है खुदगर्ज़ी।

अपना ही मतलब हल करना, अपना ही काम बनाने की इच्छा रखना, यह लड़ाई का सबब है, इससे झगड़े बढ़ते हैं, लड़ाईयां छिड़ती हैं और जंगोजदल तक नौबत पहुंच जाती है। अगर आप लोगों की ज़िन्दगियों पर गौर करेंगे तो आप पर रौशन हो जाएगा कि इस ज़माने में मतलब बरारी और खुदगर्ज़ी इन्तहा पर पहुंच गई हैं। महात्मा वीर इस समय के लोगों की खुदगर्ज़ी का नक्शा खींचते हुए फरमाते हैं,

प्रेमी आखदा यार गमखार केहड़ा
मतलब वासते यारियां लांवदे ने
मतलब होए ते आके बहण लागू
मतलब होए ते दोस्ती पांवदे ने
मतलब होए ते मलदे आण बूहा
मतलब बाझ न कदी बुलांवदे ने

मतलब वासते आण चरण फड़दे
मतलब बाझ न बोलणा चांवदे नें
दुनिया मतलबी ढूंढदी नित मतलब
मतलब वासते ही भजन गांवदे ने।

एक दूसरी जगह और कहते हैं,

मां गर्ज़ दी है बाप गर्ज़ दा ए
गर्ज़ बाझ कोई रिश्तेदार नाहिं
चाचे चाचियां भैण भरा सारे
गर्ज बाझ करदे गुफतार नाहिं
गर्ज़ की, अरधंगी कहाण वाली
बाझ गर्ज़ दे आपणी नार नाहिं
गर्ज़ बाझ न किसे नू कोई पुछे
बाझ गर्ज़ दे कार विहार नाहिं
हर कम दे विच है गर्ज़ यारा
गर्ज़ बाझ कोई कारोबार नाहिं।

खुदगर्ज़ी पैदा होने का सबब

इन्सान में खुदगर्ज़ी क्यों आती है, अब इस पर विचार करते हैं। खुदगर्ज़ आदमियों को देखें तो एक बात उन पर नुमाया होगी, वह यह कि उनका सब कुछ अपने आप

तक माहदूद होगा। बस यह अपने आप तक माहदूद होना ही खुदगर्ज़ी का असल सबब है यानी जब इंसान अपने आप को सिर्फ अपनी ज़ात तक ही माहदूद कर लेता है और यह ख्याल करने लगता है कि बाकी दुनिया से मेरा कोई ताल्लुक या रिश्ता नहीं, "कोई मरे या जिए, सुथरा घोल बताशे पिए", इससे वह अपनी जुदागाना जिन्दगी हिफाज़त बरतरी और फिक्र करने लगता है। अपने बचाव और बढ़ाव के लिए वो दूसरों से तेज़ मुकाबला, पौशीदा चालबाज़ी, लगातार बाहमी रगड़ में मश्कूल हो जाता है। मारधाड़ करना, धोखा फरेब देना, दूसरे की मेहनत पर जीना, अपनी ताकत और रुतबे को बढ़ाना, दौलत और सरमाया और सामान-ए-ऐशो इश्रत को अपने लिये ही समझना और जमा करना शुरू कर देता है। रफता रफता वो अपने लिये ऐसा महसूस करने लगता है कि दुनिया में मैं ही एक ऐसा शाहाना वजूद रखता हूं जो सबमें अलग-थलग है और इसी बिना पर सब को अपनी मर्ज़ी के मुताबक काम में लाना मेरा हक है और मैं किसी कानून के ताबया नहीं। ऐसे ख्यालात और अमल से इंसान इंतहा का खुदगर्ज़ बन जाता है और अपने कारोबार में अपने मतलब को ही सामने रखता है।

सब इन्सान एक हैं

इस सारी बहस से यह बात साफ हो गई है कि मामूली घरेलू झगड़ों से लेकर दुनिया की बड़ी बड़ी लड़ाईयों का असल सबब खुदगर्ज़ी है और खुदगर्ज़ी की जड़ सारी दुनिया से अपने आप को अलग समझना है। अगरचे इस ज़माने में बहुत से लोगों के ज़ेहनों में यह बात समा गई है कि हर आदमी का फायदा और मकसद दूसरे आदमी से जुदा है। इस मुफाद और मकसद को हल करने के लिये उसे किसी दूसरे आदमी के फायदे और मकसद की परवाह नहीं करनी चाहिए लेकिन फिर भी अमन, सुलह और शांति की अंदरूनी आवाज़ से किसी सूरत वो भी कायल हो जाते हैं कि सोसाइटी से अलग हमारा कोई वजूद नहीं। असल में एक इंसान का दूसरे इंसानों से अलग कोई वजूद नहीं है। सिर्फ ना-समझी और परमजोत भगवान की कुदरत पर गौर न करने की वजह से इन्सानी ज़ेहन में यह गलतफहमी पैदा हो गई है वर्ना सब इंसान एक ही जोत (प्रभु के नूर) से पैदा हुये हैं और एक दूसरे के ताल्लुक में ज़िन्दा हैं। हम गौर नहीं करते लेकिन रोज़ाना बात हमारे मुशाहदा में आती है कि अगर पत्ता जिन्दा है तो टहनी के ताल्लुक

में, टहनी ज़िन्दा है तो तने के ताल्लुक में, तना जिन्दा है तो ज़मीन, हवा और हरारत के ताल्लुक में। इसी तरह अगर नाखून जिन्दा है तो अंगुली के ताल्लुक में, अंगुली जिन्दा है तो बाज़ु के ताल्लुक में। गर्ज़े कि दुनिया की हर शै हर दूसरी शै से दूर और नज़दीक का ताल्लुक रखती है और इस ताल्लुक के बगैर इस चीज़ का दुनिया में वजूद ही ना-मुमकिन है। तब इंसान इस ताल्लुक और वास्ते से कैसे दूर रह सकता है। महापुरुषों ने अपनी बारीक निगाहों से इस सच्चाई को मालूम करके कहा था कि सारा संसार एक ही कुम्बा है। गुरु नानक देव जी ने फरमाया,

अवल अल्ला नूर उपाया कुदरत के सब बंदे
एक नूर ते सब जग उपजया कौण भले कौण मंदे।

शेख सादी ने कहा है,

बनी आदम अज़ाये यक दिगरंद।

परम संत बीर जी कहते हैं,

प्रभु इक थां जापदा सारयां दा,
पुत्र ओसदे असी इंसान सारे।

सारे प्रभु के पुत्र हैं, सबका एक पिता है। इस कुदरती ताल्लुक की बिना पर लोग आपस में लड़ते झगड़ते हुए भी अन्जाने तौर पर एक दूसरे के प्रेम के

भूखे हैं। एक आदमी जब बिमार हो जाता है तो वह चाहता है कि मुझे कोई तसल्ली और तशफ्फी देने और तन मन धन से मेरी सेवा करने वाला मेरा कोई प्रेमी मिल जाये। गरीब आदमी चाहता है कि मेरे ऊपर कोई तरस खाये, मेरी सभी हमदर्दी करें। अमीर लोग चाहते हैं कि बहुत लोग उनके पास जमा रहें और कहते रहें कि हमें आपकी ज़ात से बहुत प्यार है। औरत चाहती है कि मेरा खावंद हमेशा मेरे ऊपर मोहब्बत की बारिश बरसाता रहे। रईयत चाहती है कि राजा हम से सच्चा प्रेम करे, हमारे जान माल की हिफाज़त करे। इसी मानिद राजा के दिल में भी यही ख्वाहिश है कि रईयत मुझसे दिली प्रेम करे, हुक्म को माने। गर्ज़े कि औरत-मर्द, राजा-प्रजा, बाप-बेटा, अफसर-मुतायत, हकीम और मरीज़ सब एक दूसरे से मोहब्बत के ख्वाहिश मंद हैं।

इस पोशीदा मोहब्बत की बिना पर जो एक रूह की दूसरी रूह से कुदरतन महसूस हो रही है हम बिला दरेग़ कह सकते हैं कि दुनिया में जितने भी जानदार हैं, वो सब एक ही पिता के पुत्र हैं, एक ही नूर की किरणें हैं और एक ही वृक्ष की टहनी और पत्ते हैं और अगर हम सब में भी आत्म भाव जागृत हो जाये तो दुनिया

भर की लड़ाईयां और झगड़े यकदम खत्म हो जायें क्योंकि जहां आत्म भाव होता है वहां ही सत् (ज़िन्दगी) चित (चेतनता या अकल) और आनन्द (कामयाबी) मौजूद रहते हैं। जिस तरह कोई आदमी अपने आपको धोखा नहीं देता, कोई शख्स अपना बुरा नहीं मांगता, कोई शख्स अपने नुकसान में राजी नहीं होता, कोई शख्स अपने को बिमार और रंजीदा नहीं देखना चाहता, इस तरह आत्म भाव में जागृत मनुष्य किसी प्राणी को भी इन हालतों में देखना पसंद नहीं करता।

एक मिसाल : आत्म भाव में जागृत मनुष्य किस तरह दूसरे के दुख को अपना ही दुख और फिर उसकी निवृति में अपना ही सुख मानता है, इसकी एक मिसाल अमरीका के राष्ट्रपति अबराहम लिंकन (President Abrahim Lincolon) के जीवन से पेश करता हूं। सुनिये, एक दफा अमरीका का राष्ट्रपति अबराहम लिंकन घोड़े पर सवार दरबार को जा रहा था। रास्ते में उसे एक सुअर कीचड़ में फंसा हुआ मिला। वह घोड़े से फौरन उतरा और उसे बामुश्किल कीचड़ से निकाल कर फिर सवार होकर दरबार को चला गया। लेकिन उस सुअर को बचाने में उसके कपड़ों पर कीचड़ के छींटे पड़ गये।

लोगों ने पूछा, यह क्या हुआ ? तब दरआफत से लोगों को मालूम हुआ कि राष्ट्रपति के कपड़े सुअर को बचाने में भर गये। लोग कहने लगे आप बड़े दयालु हैं कि आप सुअर की तकलीफ को न देख सके। राष्ट्रपति ने कहा, दया क्या दिल में कुछ नहीं, सुअर की तकलीफ मुत्तदी मर्ज़ यानी छूत की बिमारी थी, मुझको आ लगी, मैंने तो सिर्फ अपने दुख और रंज को दूर करने के लिये सुअर को कीचड़ से बाहर निकाला। यह है सच्चा आत्म भाव, यह है महान दिली प्रेम। इस सच्चे आत्म भाव और इस सच्चे दिली प्रेम को पुनः जीवत करने के लिए शहनशाह रूहानीयत संत बूड़ सिंह बीर ने इस मकसद को हाथ में लिया। आपने इस आत्म भाव और प्रेम भाव को हर जगह फैलाने के लिए प्रेम समाज की स्थापना की है जिसमें प्रवेश करते समय तीन अहद लेने पड़ते हैं,

प्रेम शरणम् गच्छामि
धर्म शरणम् गच्छामि
प्रभु शरणम् गच्छामि

इनमें "प्रेम शरणम् गच्छामि" यानी मैं प्रेम की शरण जाता हू, पहला अहद है। कुछ दिन हुये मुझे एक सत्संगी मिले, बोले, यह "प्रेम शरणम् गच्छामि" क्या बला है, बहुत कुछ सोचने पर भी समझ में नहीं आता।

क्या प्रेम किसी सलतनत का राजा है या कोई बड़ा ताकतवर पहलवान है या कोई खौफनाक हथियार है या कोई बड़ा शानदार महल है या कोई घना सायेदार वृक्ष है जिसकी शरण ली जाये ।

मैंने कहा कि "प्रेम" आपके तसव्वर की चीजों में से कोई भी चीज़ नहीं है। यह तो एक आनन्दमयी जज़बा है जो इंसान के दिलों से कदूरत, नफरत निकाल कर दायमी तसकीन यानी शांति इनायत कर सकता है (महात्मा बीर का रूहानी पैगाम 1945)

इसी आनन्दमयी भाव और जज़बे को बढ़ाने, फैलाने और वुसअत देने को ही प्रेम की शरण जाना कहा गया है। संत जी जब प्रेमी भाईयों से प्रेम शरणम् गच्छामि कहलाते हैं तो वह सारे जानदारों के आपसी ताल्लुकात के अहसास को ताजा कराते हैं। बार बार दोहराने से यह अमल ज़ेहन नशीन कराना मतलब है जो ताल्लुकात हाथ, पांव, मुंह, नाक, आंख और पेट का जिस्म के ताल्लुक से आपस में है या जो सम्बन्ध जड़, तना, पत्ते का वृक्ष के ताल्लुक से आपस में है, उसी मानिंद सब जानदारों का सम्बन्ध प्रभु के ताल्लुक से आपस में है। किसी इंसान या जानदार की अपनी कोई अलग या जुदागाना हस्ती नहीं है।

दुनिया के तन मन धन पर काबू पाने का असली तरीका

जो शख्स इस दुनिया के दुखों से आज़ादी चाहता है, जो शख्स यह चाहता है कि मैं किसी का गुलाम न बनूं और जिस शख्स के दिल में बड़ा आदमी बनने की धुन है, उसको चाहिये कि वह प्रेम की शरण ले और अहद करे कि मैं इस नंगी और भूखी दुनिया से कुछ नहीं लूंगा। नंगे भूखों रोगी सोगी मोहताज से कुछ नहीं मांगूंगा। इस दुनिया और इसके पीछे नहीं दौडूंगा बल्कि जो कुछ मेरे पास होगा उससे गरीबों मोहताजों और जरूरत मंदों में उनको अपना ही अंग समझ कर तकसीम कर दूंगा और जी जान से उनकी सेवा करूंगा।

याद रखिये कि दुनिया के दिल पर, दुनिया के तन मन धन पर काबू पाने का और अपने जीवन में सुख और शांति लाने का असली तरीका यही है क्योंकि प्रेम के अज़हार और प्रेम से आदमी की मदद करने से वह आदमी एहसान के बोझ तले दब जाता है फिर वह प्रेमी के बर खिलाफ सोचने, बोलने या बुरा करने के बारे में नहीं सोचता। उसके मन वचन कर्म प्रेमी के काबू में आ जाते हैं। इस तरह लड़ाई झगड़ा ईर्ष्या और

विरोधता के खत्म होने पर भी प्रेमी की इज्ज़त और तरक्की होने में कोई रुकावट नहीं आती। महात्मा बीर अपनी वाणी में इस हकीकत का अज़हार इन अलफाज़ में फरमाते हैं,

नारी जे कर कंत से सच्चा प्रेम कमाये
राज़ी होकर कंत भी वीर उसे अपनाये
बेटा जेकर बाप से सच्चा करे प्यार
पिता पुत्र के काम सब देदे बीर संवार
राजा पर्जा के तांई करे प्रेम जो बीर
पर्जा उसके प्रेम में हो जाये आप आसीर
जो कोई अपने मीत से सच्चा प्रेम कमाये
उसके बदले मीत भी अपनी जान लगाये
नौकर सच्चे प्रेम से सेवा जभी कमाये
देखा है अपनी आंख से वह मालिक हो जाये
ऐसा जेकर भक्त भी प्रभु से करे प्यार
होते होते एक दिन बन जाये करतार।

प्रेम से मुक्ति

कितने ही आदमी हैं जो दुनिया के पदार्थों से ऊब गये हैं, जिनकी उनके लिए कोई दिलचस्पी नहीं। उनकी आत्मा हमेशा की ज़िन्दगी और हमेशा के आनन्द की तलाश

में है। मगर वो बावजूद तलाश और मेहनत के कामयाब नहीं हो सके क्योंकि उन्होंने मुक्ति या निजात या असली आनन्द के असली मूल मंत्र प्रेम को नहीं समझा। वो अपनी भजन बंदगी और इबादत रियाज़त में तो मसरूफ रहे लेकिन प्रभु को जो चीज़ प्यारी है, उसे नज़र अंदाज़ करते रहे और इस तरह सच्ची निजात और मुक्ति से महरूम हो गये। प्रभु का वचन महात्मा बीर के शब्दों में सुनिए,

सफा दिल है जित्थे मैं आ वसदा हां
ते प्रेमी दी अक्खां विच मैं हसदा हां

प्रेमी दे दिल विच ही है वास मेरा
मैं हां दास उसदा ओह है दास मेरा

नहीं प्रेम विच कोई साहिबी ते दासी
परम आत्मा है मोहब्बत की प्यासी

प्रेमी दे दिल विच मैं जोती जगावां
प्रेमी नूं दर्शन मैं अपना दिखावां

मैं दे देंदा हां अख प्रेमी नूं प्यारी
समझ लैंदा मेरी हकीकत है सारी

मुक्ति का सच्चा साधन ब्यान करते हुये बीर जी फरमाते हैं,

प्रेम ही चित को साफ करे निरमैल बनाये के शान बढ़ाये
प्रेम ही कोमल चित करे सब क्रोध को मेट गुमान छुड़ाये
प्रेम ही जोत प्रकाश करे और प्रेम ही सुन्न समाध लगाये
सुर्त जो प्रेम करे शब्द से ततकाल ही बीर दसम दर पाये।

एक जगह "रूहानी इशारा" के अनुमान से लिखते हैं,

ए दुनिया के लोगो, मुक्ति चाहते हो मगर मुक्ति के रास्ते पर नहीं चलते। बातों से मुक्ति (सच्चा जीवन) नहीं मिलती। प्रेम को अपना लो फिर हकीकत के भेद को पाओगे। प्रेम ही एक ऐसी आग है जिसमें द्वैत जल जाती है। जब द्वैत नहीं रहती तब इंसान जीवन मुक्त हो जाता है।

प्रेम जीवन की झलक

एक मरतबा अमरीकी साईंसदानों को जिस्म की बनावट के मुतल्लक तहकीकात करने के लिये ज़िन्दा आदमियों के चीरने की जरूरत पड़ी। उनके इस ऐलान पर नौजवानों ने फौरन अपने आप को पेश कर दिया कि हमें काटो, हमारा जिस्म सिर्फ हमारा ही नहीं बल्कि कौम का भी है। इसी तरह जापान में उस्ताद लड़कों से पूछता है, तुम्हारा जिस्म किस चीज़ से बना है? लड़का

कहता है चावल, चने, दाल से। उस्ताद फिर सवाल करता है यह कहां से लाये ? लड़का कहता है कि बाप लाया। उस्ताद फिर पूछता है कि बाप कहां से लाया ? लड़का कहता है कि जापान की मिट्टी से। तब उस्ताद कहता है कि जापान को अख्तयार है कि वो जब चाहे तुम्हारी जान ले ले। इस लिये तुम्हें जापान के ऊपर जान निस्सार करने के लिये हर वक्त तैयार रहना चाहिये। यह है प्रेम भाव। इसी को सच्चा प्रेम कहते हैं पर यह प्रेम देश-प्रेम है। "प्रेम शरणम् गच्छामि" में जिस प्रेम का अहद लिया जाता है वह प्रेम किसी मुल्क, किसी कौम, मज़हब, फिरका, रंग रूप, नसल या ख्यालात और अकीदा तक माहदूद नहीं बल्कि हर जानदार से बगैर किसी किस्म की तमीज़ के प्रेम का कार व्यवहार किया जाता है। प्रेमी का यह प्रेम भाव यहां तक बढ़ जाता है कि उसका जीवन अपने लिये न रह कर हर जानदार की भलाई के लिये सरफ होने लगता है। वह औरत-मर्द बच्चा-बूढ़ा, दोस्त-दुश्मन, कुत्ता, बिल्लो, भेड़, बकरी सांप, बिच्छु, गर्ज़े कि कोई भी जानदार क्यों न हो, सब पर मेहरबानियां ही मेहरबानियां करता जाता है। इसी प्रेम के कारण हिन्दू समझता है कि वह मेरा प्रेमी है, मुसलमान

कहता है कि मेरा फिदाई है, इसाई कहता है कि यह मुझ पर ही शैदा है। गर्ज़े कि प्रेमी सब का है और सब प्रेमी के हैं। दुनियादार ऐसे ही प्रेमी को देखकर कहते हैं कि मोहब्बत इसी के लिये ही दुनिया में बनी है, प्रेमी इसी लिये दुनिया में नमुदार हुआ है, जिन्दगी अगर कोई है तो यही है। प्रेम जीवन का ब्यान करते हुए बीर जी फरमाते हैं,

जिस हिरदे में प्रेम समावे, सो हिरदा निर्मल हो जावे
जिस हिरदे में प्रेम समावे, खुदी वहां से दूर भगावे
जिस हिरदे में प्रेम समावे, धीरज तिस हिरदे में आवे
जिस हिरदे में प्रेम समावे, ज्ञान दीप प्रकाश करावे
जिस हिरदे में प्रेम समावे, दुख सुख से वो न घबरावे
जिस हिरदे में प्रेम समावे, ज़ात पात का भरम चुकावे
जिस हिरदे में प्रेम समावे, नाम रसायण साची पावे
जिस हिरदे में प्रेम समावे, सो हिरदा प्रीतम बन जावे
जिस हिरदे में प्रेम समावे, बेगम हो के दिवस बितावे।

प्रेम ही जीवन का आधार है

एक फारसी का शायर लिखता है,

अज़ मोहब्बत मुर्दा जिन्दा मेशवद
अज़ मोहब्बत शाह बंदा मेशवद

अज़ मोहब्बत दर्द हा काफी शुवद
अज़ मोहब्बत दर्द हा शाफी शुवद
अज़ मोहब्बत तलखहा शीरीं शुवद
अज़ मोहब्बत मिसहा जररीं शुवद ।

तर्जुमा : प्रेम से मुर्दा भी जिन्दा होता है, प्रेम से शाह बंदा होता है ।

प्रेम से तलखी की लज्ज़त हो शकर
प्रेम से होता है तांबा मसले ज़र
प्रेम से हो जाते हैं कांटे गुलाब
प्रेम सिरके को भी करता है शराब ।

बीर जी फरमाते हैं,

जिसने भी कुछ किया है कीना प्रेम बढ़ाये
प्रेम बिना संसार में मकसद हाथ न आये
तन मन धन को वार कर बीर क्रांति लाओ
नफरत द्वैत मिटाये के साचा प्रेम बढ़ाओ ।
प्रेम धर्म और प्रभु का बीर जहां हो वास
क्रोध कपट का वहां से हो जायेगा नाश
बातों से कोई प्रेम का पा सकता नहीं सार
जब तक इस पर अमल कुछ करे न बीर विचार ।

बाअज़ आदमी प्रेम का मतलब मीठा बोलना और किसी को दुख न देना ही समझते हैं पर इन दोनों

बातों से प्रेम का पूरा मफहूम (असलीयत) अदा नहीं होता क्योंकि यह दोनों बातें अक्सर धोखेबाज़ आदमियों के जुमले में मिल जाती हैं और न इन दोनों बातों से कोई आदमी ज़िन्दगी में कामयाब हो सकता है। कोई आदमी मीठा बोलता है और किसी को दुख नहीं देता है पर सुस्त और आलसी है, काम में दिल नहीं लगाता, ऐसा आदमी ज़िन्दगी में कैसे कामयाब हो सकता है ? कभी नहीं। प्रेम का मतलब तो हर काम, हर बात में दिली तवज्जा, दिली शफकत और दिली प्रेम को लगा देना चाहिए। जब कोई काम सच्चे प्रेम या पूर्ण ध्यान से किया जायेगा तो वो फौरन सिद्ध हो जायेगा। इसी को ऊपर के शेयर में मुर्दा से ज़िन्दा और तांबा से सोना होना कहा गया है। सच्चे प्रेम और पूर्ण ध्यान के न होने से हम इस दुनिया में दुख भोग रहे हैं। जगह बा-जगह ठोकरें खाते हुये दूसरों के गुलाम बन रहे हैं। हम किसी काम को सच्ची प्रेममयी लगन और सच्चे ध्यान से नहीं करते। हर एक काम को बेदिली और मुर्दा दिल बन कर करते हैं इस वास्ते ना-कामयाबी का मुंह देखते हैं। हम सत्संग में बैठते हैं पर सत्संग से हमें प्रेम नहीं क्योंकि हमारा मन दुनियावी झगड़ों को सोचता है। दफतर का

काम करते हैं पर दफतर के काम से प्रेम नहीं क्योंकि हमारा मन घर के झगड़ों की सोच में लग रहा है। ज़हां प्रेम होता है वहां पूरी तवज्जा हो जाती है। हर काम में पूर्ण ध्यान और कामल तवज्जा का न होना ही सच्चे प्रेम की कमी को ज़ाहिर करता है। बगैर सच्चे प्रेम और पूर्ण ध्यान के कोई शख्स "प्रेम शरणम् गच्छामि" कहने का पूर्ण हकदार नहीं। पूर्ण ध्यान और पूर्ण एकाग्रता से अपने कामों को सर अन्जाम देना ही सच्चे मायनों में प्रेम की शरण जाना है। "प्रेम शरणम् गच्छामि" का असली और सही मफहूम है, प्रेम की शरण आईये।

बीर जी के इन शब्दों से जो कि आपको अपने दिलों में जमा लेने चाहियें, मैं इस ट्रैक्ट को खत्म करता हूं और साथ ही आप से प्रार्थना करता हूं कि आप ज़िन्दगी के हर पहलू और हर काम में प्रेम शरणम् गच्छामि का अहद लेकर कामयाब और बामुराद हों।

मैं अब वाजया तौर पर दोहरा देना चाहता हूं कि इन्सानियत प्रेम मोहब्बत से ही कायम रह सकती है ईश्वर भी प्रेम से ही पाया जा सकता है। जो रोग बढ़ जाये तो उसका इलाज करना चाहिये। अब दुनिया को

नफरत का रोग तबाह कर रहा है, इस वास्ते इस रोग को दूर करने के लिये प्रेम से बढ़ कर कोई नुस्खा नहीं।

मन वाणी और कर्म में प्रेम ही प्रेम होना चाहिये। अब इस बात की सख्त ज़रूरत है कि हर एक आदमी को दिल में सच्चा प्रेम पैदा करके अपनी आत्मा को बेदार करना चाहिये क्योंकि जब तक आत्मा बेदार न हो, इन्सान अपने आप को नहीं पहचान सकता और जब तक अपने आप को नहीं पहचानता इसे इन्सानियत की कदर नहीं मालूम हो सकती।

श्री प्रेम जी सहाय

—★—

K.P. SABHA AM
No

धर्म शरणम् गच्छामि

प्यारे रमेश,

मेरा खत पाकर आपको खुशी हुई और आपका खत पाकर मैं कितना खुश हूं, क्या आप इसका अंदाज़ा कर सकेंगे। आ हा! प्यारे दोस्त का प्यार भरा खत। रमेश सच मानो, मैंने आपके खत को बेअख्तयार चूम लिया। देखने वालों ने मुझे ऐसा करते देख कर क्या समझा होगा, यह सोच कर मैं शर्मा गया।

आप सुनना चाहते हैं कि आज कल कैसे गुजर रही है। क्या आप सुन सकेंगे कि मेरी ज़िन्दगी किस ढंग से गुज़र रही है। यह लम्बी कहानी है। मुझे तो ऐसा मालूम हो रहा है कि कुदरत मेरे साथ आंख मिचौली खेल रही है। मैं इम्तहान में फेल हो गया, रोया और खून के आंसू रोया। अब कामयाब हो गया हूं और अच्छी मुलाज़मत मिल गई है। अब मेरे होठों पर मुस्कराहट भी है और आंखों में आंसू भी। मैं नहीं समझ पाता कि यह आंसू खुशी के हैं या गम के। शायद

दोनों के हों। मेरे दिल पर गम के इतने चरके, इतने जख्म हैं जो कभी भर नहीं सकते और मुझे इतनी खुशी मिली है जिसका मैं अंदाज़ा नहीं कर सकता। मेरे सामने मेरा सोने का संसार उजड़ गया, मैं संसार सागर में बेसहारा डूबने तैरने लगा लेकिन मेरी जीवन नैया को यकायक एक मांझी मिल गया।

आप कहेंगे मैं बात तो कुछ नहीं बता रहा, सिर्फ बातें बना रहा हूं। नहीं, यह बात नहीं है। मैं सोचता हूं, मैं अपनी राम कहानी कहां से शुरू करूं। लो शुरू से ही सुन लो। पाकिस्तान से लुट-पुट कर और मां-बाप को जनूनी गुंडों की भेंट करके जब मैं हिन्दुस्तान पहुंचा तो यहाँ भी वही कुछ देखा जिसकी उम्मीद न थी। मैंने सोचा था कि बरबरीयत का नंगा नाच पाकिस्तान में ही हो रहा है और वहीं इन्सानियत सिसक-सिसक कर दम तोड़ चुकी है पर भारतवर्ष की धर्म भूमि और पवित्र भूमि पर भी वही कुछ हो रहा था और इस स्वर्ग में भी वही आग भड़क रही थी जिसके शोले पाकिस्तान में छोड़ आया था। लूट, क़त्ल, आतिशजनी, अगवा, आहें, कराहें सुनते-सुनते मेरा विश्वास ईश्वर और धर्म से उठ गया। मुझे उम्मीद थी

कि भारतवर्ष में जहां धर्म प्रधान है, मुझे शान्ति मिलेगी लेकिन मेरी आशा पूरी न हुई। गरीबी, तंगदस्ती, बिमारी और हिन्दुस्तानियों की बेइतफाकी और बेएतनाई देख कर तुम्हारी भाभी की हालत और भी बिगड़ गई और वो दिल पर जख्मों का बोझ लेकर ज्यादा देर तक न जी सकी। जिस मौहल्ला में मैंने पनाह ली थी, जिस मौहल्ला में परदेसी होने के बायस मेरी किसी से जान पहचान न थी जिससे कुछ मांगता। मौहल्ला वालों से कोई उम्मीद न थी क्योंकि उनके दिलों में रिफ्यूजीयों के लिए कोई जगह न थी। आह रमेश, क्या बतलाऊं, उस वक्त मेरी क्या हालत थी। इस भरी दुनिया में कोई अपना न था। मेरे मकान के साथ की आलीशान बिल्डिग में एक रईस श्री राम आसरा रहते थे। उन्हें मुझसे हमदर्दी जरूर थी। उनकी कोशिशों से मुझे यह मकान मिला था और शुरू में उन्होंने ही ज़िन्दगी के लिए इन्तहाई जरूरी सामान मुहईया करने में मेरी मदद की थी। उसके बाद उन्होंने फुर्सत न होने के सबब मेरे में ज्यादा दिलचस्पी नहीं ली। अगर मैं उनसे कहूं तो वह जरूर मेरी मदद करेंगे, यह मुझे यकीन सा हो गया था और इसी यकीन के बूते पर मैं उनके यहां गया

लेकिन उनके दफ्तर के दरवाज़े पर मेरे पांव रुक गए। वह कपड़े बदल कर बाहर जाने की तैयारी कर रहे थे। उन्होंने खुद ही पूछा, कहिए। कोशिश करने पर भी मैं बोल न सका। आंसूओं से भरी आंखें उनकी तरफ उठीं और फिर झुक गईं। वह मेरे पास आकर बोले, "कोई काम है क्या मुझसे ?"

"मैं मुसीबत ज़दा", बहुत मुश्किल से कह पाया। उन्होंने मेरी तरफ देखा। उनकी आंखों में मेरे लिए हमदर्दी झलक रही थी। धीरज रखो, जो हो गया सो हो गया। मैं सत्संग में हो आऊं फिर कुछ बंदोबस्त करूंगा। सत्संग का नाम सुनकर एक दफा तो मेरे दिल में गम और गुस्सा की लहर उठी क्योंकि इन सत्संगियों और धर्म सभाईयों की वजह से तो मेरी यह हालत हुई थी। फिर भी उनकी हमदर्दी और इमदाद के ख्याल से खामोश रहा।

रमेश, खत लम्बा हुआ जा रहा है, आप उकता गए होंगे लेकिन मेरी असल कहानी तो आगे चलकर शुरू होगी। खैर, अब खत्म करता हूं। कहोगे तो फिर लिखूंगा।

तुम्हारा रंधीर

(2)

प्यारे रमेश,

आज सुबह की डाक से आपका खत मिला। आप जो मेरी राम कहानी सुनने के लिए इतने बेकरार हैं, वह आपकी कहानी जैसी कोई रस और रंग से भरपूर कहानी थोड़े ही है।

अगले दिन राम आसरा ने मेरे रोज़गार का बंदोवस्त कर दिया। काम में लगे रहने के बायस पिछले गमों की याद जाती रही। मन कुछ हल्का सा हो गया। अगरचे राम आसरा का बड़ा आदमी होने के बायस मेरे से बहुत कम वास्ता पड़ता था फिर भी मेरे दिल में उनके लिए बेहद इज्ज़त थी। कई मरतबा जी चाहा कि कोई मौका मिले तो कदम बोसी हासिल करूं पर महरूम रहा। इस दौरान में एक बात मुझे मालूम हुई कि हर इतवार के 12 वजे के करीब मेरे जैसे कितने ही गरीब और सादा लोग बड़े आदमियों के साथ उनके मकान में आते जाते रहते हैं। मैंने सोचा कि किसी इतवार को क्यों न मैं भी शामिल होकर अपने दिल की हसरत पूरी करूं। अगरचे मुझे ईश्वर और धर्म से ज़रा भी प्यार नहीं रहा था और इनको मैं एक फजूल

चीज़ समझता था। चुनांचे एक इतवार को मैं $7\frac{1}{2}$ बजे मकान के बाहर खड़ा हो गया और 8 बजे जब राम आसरा मकान से बाहर निकले तो मैं भी उनके पीछे-पीछे चला। जब वह सत्संग भवन में पहुंच कर पहली कतार में बैठ गए तो मैं भी उनके पीछे दूसरी कतार में बैठ गया। रमेश, वहां के वातावरण की क्या कहूं, जैसे गर्म लू में झुलसा हुआ आदमी किसी सर्दखाना में पहुंच कर शान्ति और चैन महसूस करता है वैसे ही मुझे वहाँ मानसिक और दिमागी सकून हासिल हुआ। यकलखत मैं अपने आप को हल्का फुल्का महसूस करने लगा। मेरे दिमाग से सारे फिकर गम हट गए। मां-बाप और बीवी की जुदाई का सदमा जाता रहा। मुझे ऐसा मालूम होने लगा कि यहां जितने आदमी बैठे हैं वो सारे ही सारे मेरे हमदर्द और खैरख्वा हैं। सामने चौंकी पर जो महापुरुष बैठे थे उनकी शान क्या कहूं, चेहरे पर नूर बरस रहा था, आंखों में रुहानीयत चमक रही थी, होठों पर हल्का सा तब्बसुम, बोली ऐसी मीठी कि कान सुनते सुनते थकते ही न थे। मैं तो उन्हें देखता भी न थका। मेरा तो क्या ज़िकर है, सारे के सारे आपा भूले हुए थे। मजाल है सैंकड़ों की हाजरी में किसी की सांस की आवाज़ भी सुनाई दे। इन महाराज

(संत बूड़ सिंह वीर) का इशारा पाते ही एक भाई ने उठ कर मीठे स्वर में यह शब्द पढ़ा,

प्रेम शरणम् गच्छामि, धर्म शरणम् गच्छामि,
प्रभु शरणम् गच्छामि ।

लेकर नाम सहारा पाऊं मोक्ष द्वारा बनके ठीक मैं नामी
प्रेम शरणम् गच्छामि ।

पूर्ण जीवन पाऊं सच्ची मौज मनाऊं रह जाए कोई न खामी
प्रेम शरणम् गच्छामि ।

आत्म देव जगाऊं मंद कर्म जलाऊं बनके मैं सतगामी
प्रेम शरणम् गच्छामि ।

जब मैं सहज समाऊं मन को जीत दिखाऊं मिट जाए सगल गुलामी
प्रेम शरणम् गच्छामि ।

सब की सेव कमाऊं मन में धीरज पाऊं रीझे तब ही स्वामी
प्रेम शरणम् गच्छामि ।

जब मैं सत को पाऊं सारे सत फैलाऊं मिट जाए सब बेआरामी
प्रेम शरणम् गच्छामि ।

शब्द सुनते हुए तो मुझे ऐसा जान पड़ा कि मैं इस संसार में नहीं बल्कि देवताओं के लोक में पहुंच गया हूं । रमेश, सत्य कहता हूं मेरे पर तो जादू का असर हो गया । मैं जो धर्म और ईश्वर को ढकोसला समझता था

नामालूम अब मेरे दिलो-दिमाग ने किसी बहस और तकरार के बगैर उन्हें क्यों यकदम तसलीम कर लिया।

वापसी पर राम आसरा की निगाह मुझ पर पड़ गई। उन्होंने प्यार से मेरा हाथ पकड़ा और अपने साथ कोठी पर ले गए। अभी बैठे ही थे कि नौकर चाय की प्यालियां ले कर आ गया। पीते वक्त राम आसरा ने कहा, रन्धीर शायद तुमने महाराज बीर जी की बाणी न पढ़ी हो। यह किताब महाराज की बाणियों की मजमूहा है इसे पढ़ा करो। मैं शुक्रिया के साथ उनसे वह किताब ले ली और उसी दिन लगभग शाम 5 वजे खत्म करदी। इससे पहले मैंने सचमुच ऐसे शब्द नहीं पढ़े थे। उनकी बाणी प्रेम और मोहब्बत भरी थी। मीठा-मीठा प्रेम पढ़ते-पढ़ते मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे लिखने वाला अपने दिल का अगाहद विश्व प्रेम मेरे दिल में भर रहा हो और धर्म के पथ पर चलने के लिए मुझे बुलाता हो और अपनी रहनुमाई में साथ ले जाने के लिए भी तैयार हो। अखबारों और रसालों में उनकी रचित एक एक बाणी पढ़ी। जिन जिन रसालों में उनकी बाणी छाया होती है उनका खरीदार बना। अब तो उनकी बाणी पढ़ते पढ़ते ऐसा महसूस करने लगता

हूं जैसे मैं हर लम्हा उनके करीबतर होता जाता हूं।

रमेश; जब नदी दोनों किनारों से भर जाती है तो शान्त बहती है। मेरे प्रेम धर्म की नदी भी अब दोनों किनारों से भर कर शान्त बह रही है। अब इसमें भयानक लहरें नहीं उठतीं, मधुर तरंगें ही उठती हैं और इन पर होले-होले मेरे जीवन की नैया बढ़ रही है। रमेश, प्रेम धर्म की शरण आने से पहले मेरी जीवन खेती खुश्क हो गई थी, मैं अक्सर रोता रहता और धर्म की शरण में आ जाने पर मेरे चेहरे और होठों पर परेशानी और उदासी की बजाय मुस्कराहट रहती है ओर मेरी उजड़ी हुई फुलवाड़ी पर बसंत आ गया है। रमेश, मैं चाहता हूं कि जिस रूहानी लुतफो-सरूर में मैंने लज्ज़त हासिल की है, उसमें आप भी शरीक हों।

आओ सहज मुक्त सब पाएं
जिससे दुख सुख से हो ऊंचे जोत माहि मिल जाएं
जिससे भरम भेद मिट जाएं यम का तरास मिटाएं।

आप भी एक दफा मेरे साथ मिल कर कहें,

प्रेम शरणम् गच्छामि, धर्म शरणम् गच्छामि,
प्रभु शरणम् गच्छामि।

तुम्हारा रंधीर

(3)

प्यारे रंधीर,

तुम्हारा लिफाफा मिला, बड़े शौक से खोला और निहायत बेसबरी से पढ़ना शुरू किया। ज्यूं ज्यूं पढ़ता जाता था मायूसी तारी होती जाती थी। आपने बी.ए. कर ली पर मुसीबतों ने आपके दिमाग को मुअत्तल कर दिया और आज से दो हजार वर्ष पहले के अनपढ़ और सादा लोगों की सफ में ला खड़ा किया। ईश्वर किसने देखा है। किसी ने नहीं पर वहम ने हौवा बना रखा है। मान लो ईश्वर कोई है, हर्ज़ नहीं। प्रेम की बात किसी कदर सही है। हम सब प्रेम के हाथों बिके हुए हैं, मैं उसकी शरण लेने को तैयार हूं। उसकी शरण न लें तो सुरैया, कामनी, मनोरमा का खूबसूरत तक्खईअल जाता रहेगा और यह धर्म भला बताओ तो सही, बी.ए. तक किसी डिक्शनरी में यह लफ़ज़ भी आया है। पुराने-पुराने लोग इस का ज़िकर करते होंगे मगर अब तो पौशीदा हो चुका है। धर्म—छी छी, मुझे तो यह लफ़ज़ कहते हुए भी कै आती है पर तुम्हारी खातिर दिल पर जबर करके यह भी सुन रहा हूं, पढ़ भी रहा हूं और तुम्हारे समझाने की खातिर बार बार लिखूंगा पर इसके

लिए न दिल मानता है न दिमाग। फिर आप कहेंगे, इस नफरत की वजह ? सुनो, इस धर्म पर चलने की वजह से जिसकी आप शरण ले रहे हैं, इन्सान को जो जो मज़े चखने पड़े इसके लिए आप योरुप का इतिहास पढ़िये। गलिलीयो को फांसी क्यों दी गई, सिर्फ इस लिए कि धर्म नहीं कहता था कि ज़मीन घूमती है। सुकरात को ज़हर का प्याला क्यों पीना पड़ा सिर्फ इस वजह से कि वह रिवाजी धर्म की ताईद नहीं करता था। हिन्दुस्तान का इतिहास देखिये, कितनी बेरहमी से धर्म के नाम पर नेक आदमियों को ज़िबह किया गया, कितने ही शहर और गांव उजाड़े गये, कितने लोगों को सारी उमर के लिए गुलाम बनाया गया। पिछली बातों को जाने दीजिए। अब पूर्वी बंगाल के हिन्दूओं से पूछिए, उन्हें धर्म से क्या मिला है ? मगरबी पंजाब के हिन्दू सिक्खों से पूछिए धर्म ने संसार को क्या दिया है ? धर्म से क्या फायदे हैं, उसे बिहार के मुसलमानों से पूछिए ? धर्म इन्सान को कितना रहमदिल बनाता है यह पाकिस्तान के अहमदियों से पूछिए और फिर कहिए धर्मं शरणम् गच्छामि। रंधीर, यह धर्म के नारे लगाने वाले धार्मिक महापुरुष कुकर्म करते हुए ईश्वर से कितना डरते हैं, यह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के शरणार्थियों से पूछिए, इस धर्म का फल

उन अगवा की गई औरतों से पूछिए जिन्हें पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के धर्मावलम्बियों ने अगवा किया है, पूछिए उन लोगों से धर्म की बातें जिनके देखते देखते बच्चे, बूढ़े, औरतें मौत के घाट उतार दिए गए, इस धर्म की बाबत उनसे पूछिए जो कल करोड़पति थे और आज दर-दर भिखारी बने मारे-मारे फिरते हैं। धार्मिक लोग कहते हैं कि अगर धर्म को न माना जाए तो नरक, दोज़ख और ईश्वर का डर उठ जाए और संसार में चोरी, लूट-मार और खून-खराबा होने लगेगा। यह भी सही नहीं, दुनिया में तो अब तक इसका उल्ट ही देखने में आया है। जितने दंगे-फसाद, झगड़े, पुशतों खून धर्म के नाम पर हुए हैं उतने धर्म को न मानने वालों ने नहीं किए। पड़ताल कर लीजिए आज तक जितनी भी लड़ाईयां हुई हैं, जितने कत्ल और खून-खराबे हुए हैं उनकी तह में आपके धर्म का ही ख्याल काम करवा रहा है। आज के इन्सान के दुख का कारण यह धार्मिक नेता ही हैं। धर्म के नाम पर यह अपने पैरोकारों को राक्षस बना रहे हैं। रूस में 99 फी सदी लोग धर्म को नहीं मानते फिर भी वहां न लूट है, न रिश्वत, न ब्लैक मार्कीट और न खून खराबा है पर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में जहां सौ फी सदी लोग

धर्म के पैरोकार हैं सब से ज्यादा डाके पड़ते हैं, खून होते हैं, चोरियां होती हैं, रिश्वत और ब्लैक मार्कीट ज़ोरों पर है।

रंधीर, धर्म इन्सान को इन्सान नहीं रहने देता। धर्म इन्सान को गुलाम बना देता है। आज़ादी और आज़ाद ख्याली ही सब गुणों, सब नेकियों और सब तरह की तरक्कियों की बुनियाद है। आप कहेंगे कि धर्म कैसे गुलाम बनाता है यह भी सुन लीजिए। धर्म कहता है वेद को मानो या कुरान को मानो या अंजील को मानो। जो कुछ उनमें लिखा है उसे ईश्वरीय वाणी या खुदा का पैगाम समझो। उसके खिलाफ न कुछ कहो, न कुछ सुनो और न उसकी तहकीकात करो। चाहे कितनी भूख लगी हो रमज़ान में रोज़े ज़रूर रखो, एकादशी का व्रत करो। चाहे नमाज़ या प्रार्थना तुम्हें कितनी ही बेहकीकत मालूम दे फिर भी मस्जिद में जाकर सजदा ज़रूर करो या मंदिर में घंटा बजाओ। जो इस तरह न करे उसे कोड़े और दुर्रे मार मार कर मजबूर करो और जो इन किताबों को अल्हामी न माने वो काफर और बेदीन है उस को मारो, बहिश्त मिलेगा। अगर लड़ाई में तुम मर गए तो तुम्हारे सारे गुनाह बक्शे जाएंगे।

यह धार्मिक लोग बरारास्त रूहानी इलम, ज़ेहनी सोच-विचार और समझ की बजाए अक्ल को ताला लगा कर किसी एक शख्सीयत या किताब में अंधाधुन्ध एतकाद कराते हैं जिससे इन्सान रौशनी से महरूम हो कर सिर्फ लाठी के सहारे चलता है। यह लोग लामाहद्दूद सच्चाई को एक खास शकलो हद के अंदर माहद्दूद कर देते हैं जिससे इन्सानो दिल और नज़र में तंगी पैदा हो जाती है और यही तंगी ताअसुब और नफरत की आलमगीर ज़हर की शक्ल में ज़ाहिर हो कर सच्चाई और मोहब्बत के फैलाव में रुकावट बनती है। रंधीर, यह धर्म के गुलाम लाखों साल से ईश्वरीय धर्म और ईश्वरीय पुस्तकों का दावा करते हुए दुनिया के लिए कुछ नहीं कर सकते थे। बिजली, तार, रेल, हवाई जहाज़ किसी धार्मिक पुरुष ने अपनी धार्मिक मालुमात के बिनाअ पर इजाद नहीं कीं और न इनका इन्कशाफ किया बल्कि इन तमाम इज़ादों और मालुमातों को उन लोगों ने दरिआफ्त क़िया है जिनका यह अकीदा था कि धर्म महज़ ढकोसला है और धार्मिक पुस्तकें महज़ फरेब हैं अगर वो भी इनकी मानिंद फर्ज़ी धर्म और अकीदों के पाबन्द होते तो न उनका तहकीकात का हौसला बढ़ता और न इस कदर इज़ादें

ज़हूर में आकर दुनिया को आराम दे सकतीं। आप कहते हैं कि मैं भी आपके साथ धर्म शरणम् गच्छामि का अहद लूं। मेरे लिए आपका यह कहना मेरे ज़ख्म पर नमक छिड़कना है।

नहीं हम तिशना काम साकी सम्भाल सागर सबूह उठाले
न छेड़ भूली कहानियां हम नहीं हैं बातों में आने वाले।

धर्म का लफ्ज़ सुनते ही मेरा हृदय कांप उठता है और दिल की गहराई से बेअख्तयार ही यह शब्द निकलते हैं, मुझे धर्म की कोई ज़रूरत नहीं मुझे तो ऐसी जगह की ज़रूरत है जहाँ धर्म की गंध तक न हो। Mr. Cinker Luis जिन्हें Noble Prize मिला है एक जगह लिखते हैं कि यह समझना सरासर भूल है कि ज़िन्दगी को कार-आमद और सुखी बनाने के लिए या मुसीबत में तसल्ली के लिए धर्म की कोई ज़रूरत है।

जिस रूहानी महापुरुष के आपने गुण गाए हैं उनकी बाबत तो बस इतना ही काफी है,
यह उनके हुस्ने जवां की बातें, शबाब के ये अफसाने, तोबा
तू मुझसे कहता है हमनफस क्या सभी ज़माने हैं देखे भाले।

तुम्हारा,
रमेश।

प्रिय बन्धु,

तुम्हारे खत के साथ जो रमेश की चिट्ठी मुतालया के लिए भेजी, मिली। तुमने लिखा है कि महाराज के सत्संग में बैठते ही आपके दिल ने बिना किसी बहस के "धर्म शरणम् गच्छामि" कहना तसलीम कर लिया लेकिन रमेश की चिट्ठी के बाद दिमाग ने उसके खिलाफ़ बगावत कर दी और इस तरह दिल-दिमाग की जंग ने आपको बेचैन कर दिया, पढ़ा। तो तुम लिखते हो, इस बारे में मैं कुछ रहनुमाई करूं तो सुनो। रमेश ने जो यह लिखा है कि धर्म ने दुनिया में जंग कराए, पुशतों खून बहाया, मुलकों के बटवारे कराए, औरतों को अगवा कराया, पूंजीपतियों से भीख मंगवाई, ठीक नहीं है। नास्तिक लोगों ने गुमराह करने के लिए इस किस्म के ख्यालात का प्रचार किया है कि यह जो कुछ हुआ है धर्म की बदोलत हुआ है लेकिन रंधीर, धर्म आज तक दुनिया में जंग और फसाद का बायस कभी नहीं हुआ बल्कि आपस की रक़ावत, दुश्मनी, धड़ेबाजी और ख़ुदगर्ज़ी ही तमाम लड़ाईयों और फ़सादों की बुनियाद ठहरी है। हां, चालाक लोगों ने अपनी रकावत, दुश्मनी, धड़ेबाजी और ख़ुदगर्ज़ी को छिपाने के लिए धर्म को जरूर आड़ बनाया है। मेरे ख्याल में धर्म को आड़ बनाना लिखना किसी तरह ठीक

नहीं बल्कि यहां लफ्ज़ मज़हब या सम्प्रदाय चाहिए। खैर तुम्हारी तसल्ली के लिए यहां लफ्ज़ धर्म ही लिख देता हूं। इसके अलावा इन लड़ाईयों और फसादों की दूसरी वजह गलत कौमियत का ख्याल भी है। कौमियत के मुतल्लक ये सिखाया जाता है कि अलग-अलग मुल्क में बसने वाले इन्सानों की अलग-अलग कौम है और फिर हर एक कौम वाले से यही कहलवाना कि मुझे बाकी सब कौमों पर हकूमत करने का हक हासिल है यही अलहदा-अलहदा कौम का जज़बा और हकूमत करने का ख्याल तमाम फसादों, लड़ाईयों और झगड़ों का सबब बन जाता है। धर्म तो सारी दुनिया के इन्सानों की एक कौम बताता है और इस तरह एकता और प्रेम पैदा करने की कोशिश करता है पर इन्सान की खसलत इस कदर खुदगर्ज़ और धड़ेबाजी की है कि बेगर्ज़ी और प्रेम के प्रचार के बावजूद लोग खुदगर्ज़ और धड़ेबाज बन जाते हैं और आपस में जंगो जदल करते हैं और लुत्फ यह कि इसकी जिम्मेवारी अपने पर या अपनी पार्टी पर लेने की बजाए धर्म पर डाल देते हैं। हां, इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि बाअज़ औकात चालाक और पाखंडी लोगों ने अपना उल्लू सीधा करने के लिए धर्म के नाम पर सादा लौ लोगों को बुरी तरह लूटा है लेकिन फिर भी इससे

जिम्मेवारी धर्म पर नहीं डाली जा सकती बल्कि इस लूट और नुक्सान की जिम्मेवारी उस वक्त के रिवाजी मज़हब सम्प्रदाय या गिरोह और फिरके के ख्यालात और प्रचार पर है और यह लफ्ज़ "धर्म" किसी तरह मज़हब, सम्प्रदाय या फिरके का हममायने नहीं। इसकी पूरी समझ तुझको धर्म पर की गई नीचे की बहस से आ जाएगी।

धर्म का अर्थ

लफज धर्म संस्कृत ज़ुबान का है जिसके लफ्ज़ी मायने धारण करने वाला या किया जाने वाला है यानि जिस बात को हम धारण करें या जिसमें हम यकीन रखें और जिसके मुताबिक हम अमल करें, उसे धर्म कहते हैं या वह नीति, वह कर्म, वह विश्वास जिसकी वजह से हम "सम" हैं, धर्म है क्योंकि वह नीति, वह कर्म, वह विश्वास हमारी बुनियाद है। उसने हमें धारण कर रखा है या यह कहो कि गिरावट से बचा रखा है।

रंधीर, बात यह है कि संस्कृत लफज़ धर्म की तसखीश जिन मायनों में हुई है उसके सही मफहूम की अदायगी के लिए किसी ज़ुबान में आज तक कोई लफज़ इजाद नहीं हुआ और यही वजह है कि उसके गलत तर्जुमों मज़हब, पंथ, मार्ग, सम्प्रदाय, मत, इमान, विश्वास

वगैरह ने इसे ज़रूरत से ज्यादा बदनाम कर दिया है।

धर्म की तारीफ

रंधीर, "धर्म से रक्षा किया हुआ इन्सान हमेशा महफूज़ रहता है और धर्म का मारा हुआ मर जाता है।" इस वास्ते धर्म की रक्षा करनी चाहिए। बज़ाहर इन लफज़ों में धर्म की कोई तारीफ नहीं लेकिन ध्यान से सोचने पर मालूम होगा कि इस श्लोक में धर्म की इतनी साफ और मुकम्मल तारीफ है कि इसके बाद और कुछ कहना बाकी नहीं रहता। ज़मीन या पृथ्वी का धर्म बोझ उठाना है। इसी बोझ उठाने के सबब हम इसे ज़मीन या पृथ्वी कहते हैं। इस तरह सूर्य का धर्म गर्मी या रौशनी है। गर्मी और रौशनी के सबब हम इसे सूर्य कहते हैं। अगर पृथ्वी बोझ न उठाए और सूर्य में आग और रौशनी न रहे तो धर्महीन होने पर पृथ्वी पृथ्वी नहीं कहलाएगी और सूर्य सूर्य नहीं कहलाएगा। इसी तरह हर चीज़ का धर्म होता है। जब तक वह धर्म है तब तक वह चीज़ है। जब वह धर्म न रहा वह चीज़ भी न रही। "इसी तरह इन्सान का धर्म कर्त्तव्य पालना या फर्ज़ की अदायगी है।" अगर इन्सान अपने कर्त्तव्य का पालन करता है और फर्ज़

की अदायगी में कोताही नहीं करता, तब वो इन्सान है वगरना इन्सान कहलाने का हकदार नहीं।

रंधीर, विशेषशेक शास्त्र के रचयिता कुनाद मुनि ने धर्म की तारीफ इस तरह की है, धर्म वह है जिससे लोक परलोक दोनों की सिद्धि हो। इस लोक की सिद्धि क्या है ? ज़िन्दगी में हर पहलू में तरक्की करना और परलोक की सिद्धि निजात या मुक्ति पाना है गोया जिस चीज़ से इस दुनिया में हर चीज़ में बहार आए और मौत के बाद फिर दौबारा जन्म न लेना पड़े उसे धर्म कहते हैं। अब सोचिए, मन्दिर में घंटा बजाना, आरती करना, मस्जिद में बैठ कर सजदा करना, किसी खास किताब पर यकीन लाना धर्म नहीं कहला सकता क्योंकि इन बातों से ज़िन्दगी अज़ादाना तौर से फलती फूलती नहीं बल्कि ताअसुब और तंगदिली के बायस माहदूद हो कर तनज़्ज़ल और गिरावट की राह पे आ जाती है। जब इस दुनिया में ज़िन्दगी में चैन न मिला और खातरखा कामयाबी न हुई तो परलोक सुधार का ज़िकर ही क्या ? यह तो बहुत ही अमूल्य वस्तु है। तब धर्म क्या है जिससे यह दोनों चीज़ें हासिल हों। यकीनन वह कर्त्तव्य पालन और फ़र्ज़ की अदायगी के बगैर और कुछ नहीं। यही कर्त्तव्य पालन और फर्ज़ की

अदायगी धर्म है जिससे दीन और दुनिया दोनों सुधरते हैं।

धर्म के लक्षण

रंधीर, जिस तरह वृक्ष का लक्षण उसका तना, टहनियां, शाखें और पत्ते हैं और पशुओं का लक्षण उनकी दुम और चार पांव हैं, मनुष्य का लक्षण उसके दो हाथ और दो पांव हैं, इसी तरह धर्म के भी (1) धरती (2) क्षमा (3) दम (4) असतेः (5) सोच (6) इंद्रिय निग्रह (7) धीर (8) विद्या (9) सत (10) अक्रोध, दस लक्षण हैं (देखो मनु स्मृति) इनका उर्दू तर्जुमा एक शायर ने इस तरह किया है,

मुआफी इनकसारी बेरिआई सफाओ सिदक ज़ोहदो बेनवाई
रियाज़त तरके ख़ाहिश पारसाई यही दस धर्म के लक्षण हैं भाई

जहां यह दस धर्म के लक्षण हैं वहीं धर्म है, जहां यह नहीं हैं वहां धर्म भी नहीं है।

धर्म का आधार

जिस तरह इन्सानों, पशुओं और दूसरी चीज़ों का आधार हमारी ज़मीन है, परिन्दों का आधार आकाश है, इस तरह धर्म का आधार सत है। ज़मीन के बगैर जिस

तरह हम कहीं ठहर नहीं सकते इस तरह सत के बगैर धर्म भी कहीं नहीं टिक सकता या यों कहिए जहां सच्चाई होगी वहीं धर्म का पालन होगा और सच्चे मायनों में धर्म की तकमील होगी "धर्म शरणम् गच्छामि" ।

रंधीर, धर्म के बारे इस मुख्तसर सी बहस से यह बात तुम पर अच्छी तरह से रौशन हो गई होगी कि जो एतराज़ रमेश ने धर्म पर उठाए हैं वो सब के सब निर्मूल हैं और धर्म जैसा कि रमेश ने समझा है, एतकाद का मजमूहा (Bundle of Faiths) नहीं है बल्कि धर्म जिन मायनों में उसकी तशकील हुई है और जिसका इन्कशाफ शहनशाह रूहानियत संत बीर जी, बानी प्रेम समाज कर रहे हैं An outlook in entire life है जिसकी पैरवी करते हुए हम ज़िन्दगी के हर पहलू में खूब तरक्की करते हैं और यह तरक्की भी इस ढंग से की जाती है कि जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष (यानी निजात) कभी भी हमारी निगाह से ओझल नहीं होता। हां रंधीर, "धर्म शरणम् गच्छामि" का अहद लेना किसी सूरत में काबिले नफरत या इन्सानी ज़ेहन की गिरावट नहीं है। हां, इसके साथ अगर कोई मज़हबी या साम्प्रदायिक लफज़ मसलन हिन्दू धर्म शरणम् गच्छामि, मुस्लिम धर्म शरणम् गच्छामि

वगैरह कराया जाता तब तो कुछ एतराज़ की गुंजाइश बन जाती पर प्रेम समाज के सत्संग में तो सिर्फ "धर्म शरणम् गच्छामि" का अहद लिया जाता है जिसका सीधा सादा तर्जुमा और मफहूम यह है कि "मैं अपने फर्ज़ को पूरा करने का इकरार करता हूं।" रंधीर सोचो तो दुनिया में कोई ऐसा आदमी है जिसके जिम्मे कोई फर्ज़ न हो। हर एक आदमी के ज़िम्मे चाहे वो किसी हैसीयत का क्यों न हो, हकूमत की तरफ से, मां-बाप, बीवी, बच्चों, गुरू, दोस्त, रिश्तेदारों की तरफ से कुछ फर्ज़ आयद होते हैं। इन फर्ज़ों को समझ कर उनके पूरा करनें का इकरार करना इन्सानियत की जानिब सही कदम उठाना है। जो लोग अपने फरायज़ को नेक नीति और सच्चाई से सर अन्जाम देते हैं तो जहां वो अपने जीवन को सुखी और आनन्दमयी बनाते हैं वहां देश को भी उन्नत करते हैं और जहां फरायज़ की अन्जाम देही में कोताही बरती जाती है वहां ज़िन्दगी बेमज़ा लगती है और देश में भी गिरावट आती है। रंधीर, जो इस वक्त देश में बेचैनी के आसार हैं या झगड़े और फसाद हो रहे हैं इन सब का एक ही मूल कारण है वह यही है कि हम अपने फर्ज़ की तरफ से गाफिल हैं। देश को बर्बादी से

बचाने का एक ही उपाय है कि लोगों को उनके फ़र्ज़ से आगाह किया जाए और ऐसी शिक्षा का प्रचार किया जाए जिससे उनको अपने फ़र्ज़ का पता लगे। एक गुलाम को खरीद करने से पहले उसके मालिक ने पूछा कि मैं तुझे मूल्य ले लूं लेकिन क्या तू ईमानदार बना रहेगा। गुलाम ने कहा आप मुझे खरीदें या न लेकिन मैं ईमानदार तो बना ही रहूंगा। यह कर्त्तव्य पालन का सच्चा भाव है। इसी ढंग से कर्त्तव्य पालन करने के लिए मनुष्य जन्म मिला है इससे सच्ची मर्दानगी का ज़हूर होता है। रंधीर, अगर आज लोग दूसरी क़िस्म की धार्मिक दीक्षाओं की निसबत अगर सच्चे दिल से "धर्म शरणम् गच्छामि" की दीक्षा ले लेवें तो सब किस्म की बुराईयां एक साथ ही खत्म हो जायें। तुम देखोगे कि इस अहद के लेने के बाद बगैर टिकट कोई सफर नहीं करेगा, अदालतों में कोई झूठा गवाह पेश नहीं होगा, सरमाएदार हकूमतों के टैक्स को दबाने की कोशिश नहीं करेंगे, हकीम और डाक्टर मरीज़ को सिर्फ इसलिए मरने नहीं देंगे कि उसके पास इस कदर रुपया नहीं है जिससे वो उनकी भारी भरकम फीस अदा करें, कारखाने वाले माल को नहीं छिपाएंगे, मज़दूरों की तरफ से हड़ताल नहीं होगी, व्यापारी अनाज

को छिपा कर नहीं रखेंगे और न कहीं मज़हबी दंगे फसाद होंगे बल्कि हर तरफ अमन अमान और खुशहाली और तरक्की, बाहमी मोहब्बत का राज्य हो जाएगा ।

आखिर में मैं बीर जी का एक शब्द लिख कर खत को खत्म करता हूं । उम्मीद करता हूं कि इससे तुम्हारे तमाम शक रफा हो जाएंगे और जिस तरह तुमने धर्म शरणम् गच्छामि का अहद लिया है उसी तरह दूसरे भाईयों को भी इस अहद के लेने की प्रेरणा करते रहोगे ।

धर्म किरत कर खाओ भाई

धर्म किरत मनुआ प्रकाशे, आवण जावण सब मिट जाई
धर्म किरत इतफाक बढ़ाये, गम भय मूल रहे न काई
धर्म किरत सब को सुख देवे, मन से देवे जलन मिटाई
धर्म किरत से हर कोई राजे, भूखा रहे न हरगिज़ भाई
धर्म किरत सब को सुख देवे, दुख में रहे न हरगिज़ काई
धर्म किरत का खाना खाकर, सहज समाध अजब लग जाई
झूठी खाहिशें दूर भगें सब, एक जगह मनुआ टिक जाई ।

—★—

प्रभु शरणम् गच्छामि

ऐ मानुष इक भेद अनोखा मैं तैनूं बतलावां
गुम होई जो चीज़ है तेरी तैनूं अज लभावां
तूं ए भेद लभण लई बीबा ज़ोर बहुतेरा लाया।
पर बेअर्थ गया ओह सारा नुक्ता हथ न आया।

(बीर)

पिछले साल की बात है मैं प्रेम समाज के सत्संग में शामिल होने के लिए लुधियाना आया। इस मौका पर जहां पुराने प्रेमियों से भेंट हुई वहां नए प्रेमियों के दर्शन हुए। उनमें एक श्री राम आसरा जी हैं। आप लुधियाना के एक धनी पुरुष हैं। कस्तूरी और हिंग का व्यापार करते हैं। प्रेम समाज में शामिल होने से पहले आप रईसआना दिलो-दिमाग के मालिक थे पर प्रेम समाज में आने पर साधु स्वभाव हो गए। मिज़ाज में सादगी आ गई। अमीर से गरीब और गरीब से प्रेमी बन गए। हज़रत दाग़ ने ठीक ही कहा है,

जो खाक में मिला वो कीमिया हुआ
यह कह रहा था कोई आज खाक में मिला हुआ।

मकनातीस जैसे लोहे को खींचता है ऐसे ही आपका शुद्ध प्रेम प्रेम समाज में सत्संग में आए जिज्ञासु जनों को खींच लेता है। बाहर से आए कितने ही प्रेमियों को आप अपनी कोठी पर ले गए। बहुत खातिर मदारात की। बाकी सब चले गये मैं रह गया इस लिए कि मैं प्रेम समाज की जंजीर में जकड़ा गया। मेरे लिए यह माहौल एकदम नया था। मैं दिहात से आया था। शहर की रंगीनियों के दरम्यान दुनियावी लिहाज़ से एक रईस और रूहानी तौर से प्रेम स्वरूप देवता की गोद में बैठकर मैं अपने आप में खो गया। प्रेम आत्मा राम आसरा ने पिछली बातें सुनाईं। श्री महाराज बीर की रूहानी ताकत का एतराफ किया। आपकी रस भरी बातों और प्रेम भरे बर्ताव से यह प्रत्यक्ष था। श्री महाराज की रूहानी दुनिया "प्रेम" आपके जिस्म के रगो-रेशा में सरायत कर चुका है। जिस तरह मन्सूर के रगो-रेशा से ऐनलहक की सदाअ आती थी इसी तरह आपके जिस्म से प्रेम-प्रेम की गूंज उठती है। इस प्रेम मस्ती में आप प्रेम सागर औरों के लिए भी उंडेल रहे हैं। जो मिलता है उसे प्रेम समाज में लाने की

LIBRARY
No
Date

कोशिश करते हैं । जिस रुपए से पहले आप कालीन और गलीचे खरीद करते थे वह अब श्री महाराज की रचित वाणियों की छपाई के लिए खर्च हो रहा है। जिस रुपये से पहले हाकमों और दोस्तों को पार्टियां दी जाती थीं वह रुपया अब यतीमों और बेवों की सेवा में खर्च होता है। श्री महाराज की ज़ात मुबारक से आप की बेइन्तहा मोहब्बत का अंदाज़ा इस बात से कीजिए कि जहां आपने महाराज की कई पुस्तकों को प्रकाशित करवा कर मुफत तक्सीम किया वहां आपके सैंकड़ों फोटो खिचवा कर जनता में मुफ्त तक्सीम किए ताकि श्री महाराज के गायबाना अकीदत मंद फोटो में ही आपके दर्शन पाकर अपने जीवन को कृतार्थ कर सकें। शाम को घूमने की गर्ज़ से आप मुझे चौड़ा बाजार में ले गए। जब उस फोटोग्राफर की दुकान के पास से, जहां कि पहले ही श्री महाराज के फोटो तैयार थे, गुज़रने लगे, अचानक आप की गुरु भक्ति उजागर हुई। आप प्रेम से बोले, श्री महाराज का एक फोटो आपके लिए भी तैयार करा देता हूं। मुझे क्या उजर था। मैं तो चाहता ही यही था कि रूहानी आनन्द और सरूर का यह नज़ारा हमेशा मेरी निगाह के सामने

रहे। आपने आर्डर दे दिया। अगले दिन फोटो तैयार हो गया, फरेम और शीशा लगवा कर पहली मुहब्बत भरी मुलाकात की याद में यह तोहफा आपने मेरी नज़र किया। मैं उसे सीनें से लगाकर लुधियाना से रतिया लाया और अपने कमरे में बड़े अदब से रख दिया। जो शख्स मेरे पास आता पहले इस तस्वीर को देखता, फिर पूछता यह किस महाराज की तस्वीर है। मैं कहता श्री संत बूड़ सिंह "बीर" बानी प्रेम समाज की। इस पर सवालों की बौछाड़ होती। कहां रहते हैं? गृहस्थी हैं या विरक्त? उपदेश देते हैं या कानों में फूंक मारते हैं? मौन रहते हैं या बोलते भी हैं? गर्ज़ यह कि कितने ही सवाल एक सांस में कर जाते। जहां तक बनता मैं जवाब देता। आखिरकार सवालात की बौछाड़ की ताब न लाकर यही सोचा कि श्री महाराज के बारे में जो भी साहिब कुछ पूछें, उन्हें बगैर मांगे ही श्री महाराज का जीवन चरित्र और प्रेम समाज और उसकी तालीम की दो किताबें नज़र कर दूं ताकि वो इनके पढ़ने से अपनी प्यास बुझा सकें। बहुत से साहिब यह ट्रैक्ट ले गए। कुछ नें दौबारा आकर प्रेम समाज के मुतल्लक बातचीत की और कुछ ने नहीं। एक दिन

मुझे एकान्त में बैठे देख एक सज्जन आए और कहने लगे आपने जो किताबें मुझे दी थीं बागौर पढ़ीं और मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि प्रेम समाज वाक्या ही एक लासानी सोसाइटी है । मौजूदा कश्मकश के दौर में इसकी सख्त जरूरत है । इसकी प्रेम भरी रूहानी तालीम के पेशे नज़र तो यही कहा जा सकता है कि इसके बानी वाक्या ही महापुरुष है पर एक बात समझ में नहीं आई । इसके जो तीन अहद हैं, इनमें दो तो हर आदमी की समझ में और अमल में आने वाले हैं पर तीसरा नेम "प्रभु शरणम् गच्छामि" तो एक लकीर पीटने वाला नियम है और निरे अन्ध विश्वास का ज़ाहिर करने वाला है । भला उस हस्ती पर जिसे किसी ने आज तक देखा ही नहीं, कौन इमान लाने लगा, किसे इस बात पर विश्वास होगा कि प्रभु या इक जोत परमेश्वर के नाम की कोई वस्तु है ? भला जिसके रहने के मुकाम का कोई पता नहीं, जो कभी ज़ाहिर नहीं हुआ, कैसे हम उसको अपना दुख दर्द सुनाएं और जब उसकी कोई शकलो सूरत ही नहीं तो वह कैसे हमारी बात सुनेगा ? आप ही बताएं फिर उसकी शरण लेने का अहद हम कैसे लें ? यह तो एक घिसी-पिटी सी बात है जिसे महाराज ने दकिया नूसियों और अंध

विश्वासों को खुश करने के लिए म समाज के तीनप्रे अहदों में शामिल कर दिया। अगर यह अहद न रखा जाता तो भी प्रेम समाज की अफादीयत यानि फायदा में कोई फर्क नहीं पड़ता। प्रेम समाज का वाहद मक्सद तो आलमगीर मोहब्बत का प्रचार करना और दुनिया में बिलातमीज़ मज़हबो-मिलत के एक भाईचारा कायम करना है। भगवान हैं, इससे उसका क्या सम्बन्ध है? लिहाज़ा मेरी राय में इसे मकबूल आम बनाने के लिए इन तीन अहदों में से "प्रभु शरणम् गच्छामि" का अहद उड़ा दिया जाए तो कोई हर्ज़ नहीं होगा बल्कि बड़े-बड़े साईंसदान, फिलासफर और नास्तिक भी इसमें शामिल हो जाएंगे। आलमगीर सोसाइटी तो तभी कहला सकेगी जब हर किस्म के विचारों के लोग इसमें शामिल होंगे। भला सोचिए कि जो Naturalists या दहरीये हैं वो क्यों प्रेम समाज का यह अहद लेकर इसके मैंबर बनेंगे उन्हें तो इस अकीदे की बिनाअ पर इस सोसाइटी से नफरत ही होगी। जब इंसानी बिरादरी के एक हिस्से को इससे नफरत रही और वो अहद को न लेने की वजह से इसमें शामिल न हो सके तो फिर यह सोसाइटी आलमगीर कैसे रही? यह तो प्रेम समाज के नाम से भी गई क्योंकि ईश्वर न मानने वालों से प्रेम कैसे होगा?

इस लिए आपसे मेरी यह इलतमास है कि आप प्रेम समाज के रुकन आला होने की हैसियत से मेरी जानिब से श्री महाराज की खिदमत में यह सुझाव लिख भेजिए कि वह प्रेम समाज को एक आलमगीर सोसाइटी बनाने के वासते इसके तीन अहदों में से तीसरे अहद "प्रभु शरणम् गच्छामि" को खारज कर दें। हां, अगर तीन की गिनती पूरी करनी जरूरी है तो मैं एक और अहद बतलाता हूं जिसको शाभिल कर दें।

"एक और अहद" ! यह सुनकर मेरे कान खड़े हो गए। इसके साथ ही कितने ख्याल मेरे दिमाग में आए। "प्रभु शरणम् गच्छामि" प्रेम समाज के सत्संग में आने वाले सब कहें या सब इसी अकीदे पर इमान लाएं, यह वाक्या ही उनके दिलो-दिमाग पर जबरदस्ती है। कालिजों से निकलने वाले नए-नए ग्रैजुएट्स (Graduates) को, जिन्होंने कभी सत्संग नहीं किया और न धार्मिक ग्रंथों को देखा, डारविन हैकल की किताबें ही जिनके लिए सब कुछ हैं, उन्हें यकदम हम कहें कि कहो, "प्रभु शरणम् गच्छामि" तो वे क्यों कहने लगे ? वे तो यही कहेंगे कि इस सदी में तो खुदा का जनाज़ा उठ गया है आप किस जंगलगार में रहते हैं जिन्हें इतना भी पता नहीं। विजली

की तरह यह ख्याल आए और चले गए। "एक और अहद", यह जानने की मेरी ख्वाहिश बढ़ गई। मैंने कहा, हां साहिब, बतलाइए वह कौन सा अहद है जिसे आप "प्रभु शरणम् गच्छामि" की जगह रखना पसंद करते हैं। यह साहब M.Sc. थे। मुझे यकीन था कि कोई ऊट-पटांग बात नहीं करेंगे। मेरी दिलचस्पी को भांप गए। उनका कुछ हौसला बढ़ा और वह सर ऊंचा करके बोले, जब से मैंने आपके दिए यह ट्रैक्ट पढ़े हैं तब से ही मैंने इस बात पर बहुत गौर किया और बड़ी सोच विचार के बाद आपसे आकर इस विषय पर बातचीत शुरू की है जो आप सुनिए। श्रीमान जी, प्रभु शरणम् गच्छामि की बजाए अगर साईंस शरणम् गच्छामि का अहद रख दिया जाए तो इस में किसी मुल्क की, किसी कौम, किसी मज़हब और किसी ख्याल के आदमी को बिल्कुल एतराज़ न होगा।

"साईंस शरणम् गच्छामि", मैंने हैरानी से कहा। वह जल्दी से बोल उठे, हां साईंस शरणम् गच्छामि, साईंस शरणण् गच्छामि। जैसे वह किसी महामंत्र का जाप कर रहे हों। वह बोले आपके प्रभु और हमारी साईंस का मुकाबला कीजिए। प्रभु शरणम् गच्छामि

कहने वाले जैसे करोड़ों साल पहले बैलों से हल जोतते थे वैसे ही अब ज़मीन काश्त करते हैं। जैसे वे पहले ऊंट, घोड़े, खच्चर पर सवारी किया करते थे अब भी उन्हीं पर जीन कसते हैं। बरसात के लिए जैसे पहले आसमान की तरफ देखते थे अब भी उनकी निगाह बादलों पर ही रहती है पर जब से साईंस का दौर हुआ है इन बातों में ही नहीं बल्कि ज़िन्दगी के हर पहलू में हैरत अंगेज़ तरक्की की गई है। तार, टैलीफोन, रेल, मोटर, हवाई जहाज़, रेडियो, टैलीविज़न, बिजली को सब जानते और फायदा उठाते हैं। यह साईंस की देन है या प्रभु की ? ज़रा बतलाइए, क्या साईंस के पुजारी दुनिया को बहिश्त बना रहे हैं या आपके प्रभु भक्त ?

दो घूंट पानी पीकर फिर बोले, साईंस ही सब कुछ है। साईंस की बदौलत मनुष्य का जीवन कितना सुखी और कितना सुन्दर हो गया है। इसका अनुभव आप रेल में सवार होते वक्त कीजिए या रेडियो का बटन दबा कर हज़ारों मील दूर बेहतरीन गवैयों के गाने सुन कर कीजिए। जब बिजली का बटन दबाते ही आपके कमरे में रौशनी फैल जाती है तब आप प्रभु शरणम् गच्छामि कहने वालों के अंधेरे कमरों का ध्यान कीजिए।

मैंने तो कुछ ही बतलाया है या आप को जो कुछ साईंस की इजाद का इलम है इस पर बस नहीं हुई अभी और बाकी तहकीकात और तजुर्बे हो रहे हैं, ज़िन्दगी का राज़ मालूम करने की कोशिश की जा रही है। मौत पर फतह पाने की तदबीरें सोची जा रही हैं और साथ ही यह कि साईंस के असूलों पर इसकी दरियाफतों पर किसी मज़हब या कौम या फिरके को एतराज़ नहीं जबकि खुदा के अकीदे पर कदम कदम पर विरोधता पाई जाती है और दिन रात इस पर बहस होती है। ऐसे हाल में साईंस शरणम् गच्छामि एक ऐसा अहद है जिसके इकरार में किसी भी इन्सान को किसी किस्म का ज़रा सा भी एतराज़ नहीं है बल्कि साईंस की इज़ादात में सभी इन्सान इस अहद के लिए अपनी खुशनसीबी तसव्वर करेंगे।

साईंस की हकीकत—यह साहब, जैसा कि मैं पहले लिख चुका हूं, M.Sc थे। साईंस के माहौल में ही पहले नास्तिक उस्तादों के सामने ही सर झुकाया, ईश्वर भक्ति और सत्संग का कभी नाम भी नहीं सुना। यह पहला मौका था कि प्रेम समाज के ट्रैक्ट पढ़े इसलिए सारी वाक्फीयत साईंस की तारीफ में मेरे सामने रखना चाहते थे। जब वह जी भर कर बोल चुके तब मैं बोला, इन्सान

को खुदा की पहचान नहीं है कुछ नफा की, नुक्सान की पहचान नहीं है।

आप साईंस के पुजारी इसीलिए हैं न कि इसकी इजादात की बदौलत इन्सान का जीवन बेहद सुखी हो गया है और आप यह भी कहते हैं कि प्रभु शरणम् गच्छामि कहने वाले इस सुख का लाखवां हिस्सा भी नहीं पा सके, उनका जंगली जीवन जैसे पहले था वैसा अब भी है। ज़िन्दगी का मकसद सुख है और ये सुख साईंस की शरण में जाने से हासिल होता है, प्रभु शरण लेने से नहीं लेकिन दोस्त आपने जो कुछ सोचा समझा है वह सिर्फ सतह ही है और उस डाक्टर के इलाज की मानिंद है जिसने फोड़े को ऊपर से तो साफ कर दिया है पर उसका मुआद अंदर ही अंदर बढ़ता रहा और एक दिन गहरे जख्म की सूरत में फिर ज़ाहिर हो गया। साईंस की इजादात से बाहर की दुनिया में चका चौंध आ गई है पर दिलों की दुनिया पहले से भी ज्यादा अंधेरी हो गई है। क्या आप नहीं देखते, इन्सान को इस कदर सहूलीयत और आराम मयस्सर होने पर भी इसकी ज़ेहनी गंदगी नहीं गई और दिन-ब-दिन इन्सान का इखलाक़ गिरता जा रहा है। ज़िन्दगी में बनावट की

ज्यादती और सच्चाई में कमी आ रही है। रूहानी पाकीज़गी खत्म हो श्रद्धा और विश्वास उठ गए हैं। बड़ों का अदब और लिहाज़ नहीं और छोटों पर मोहब्बत और प्यार नहीं रहा। कारोबार में सब जगह धोखा और इन रोज़ रोज़ के फरेबों से इन्सान का मन खराब हो गया है और बुरे मन वाला कभी सुख प्राप्त नहीं कर सकता।

सामान की फरावानी (ज्यादा होना) सुख का बायस नहीं

आप समझते हैं कि सामान की फरावानी से इन्सान का जीवन ज्यादा सुखी होता है लेकिन ऐसा नहीं है। इन्सान को कितना ही दे दिया जाए लेकिन जब तक उसके मन में शान्ति नहीं आएगी तब तक उसको इस सामान से शान्ति प्राप्त नहीं होगी। चीज़ों की फरावानी में सुख और शान्ति नहीं है बल्कि अपने मन की एकाग्रता से सुख और शान्ति उत्पन्न होती है। आप उन लोगों से मिलिए जो धनवान हैं जो साईंस की तमाम इजादात से वाकिफ हैं आप देखेंगे कि यही लोग सबसे ज्यादा गम में पागल और खुदकशी करके मरते हैं। उनके कमरों में जाकर उनके चित की हाहाकार सुनिए। तब आप महसूस

करेंगे कि उनके अंदर का मन बाहर की तरह खुशनुमा नहीं है। साईंस की दरिआफतों और इजादों के बायस इंसान को जो आराम और सुख मिल रहे हैं उनसे इन्कार नहीं किया जा सकता लेकिन इनके साथ ही यह बात भी काबिले गौर है कि क्या साईंस की इन इजादों और इन सुख साधनों की मौजूदगी में वाक्या ही इंसान का जीवन सुखी हो गया है। अगर इस पर विचार करें तो मानना पड़ेगा कि ऐसा नहीं है। इस साईंस की इजादात में धोखा और फरेब है, कत्ल खून की अफरात है खुदगर्ज़ी जोरों पर है और इस साईंस के दौर में हर एक यही चाहता है कि मैं सब से बड़ा बन जाऊं। क्या आप नहीं देखते कि इस ख्वाहिश के ज़ेर असर एक मुलक दूसरे पर छा जाने के लिए क्या कर रहा है? एटम बम्ब से कयामत खेज़ हथियार बनाने की सबकत ले जाने का भूत किस के सिर पर सवार नहीं? ऐसी सूरत में क्या सच्चा सुख साईंस की कृपा से हो सकता है? हरगिज़ नहीं। याद रखिये सच्चा सुख इन मादी ज़रिओं में और इन मादी चीज़ों के प्राप्त होने से कभी नहीं मिल सकता। जो खुद बेसबात है यानी नाशवान है और जो छिन-छिन में नाश होती

चली जाती है। यह भी याद रखिए कि जो सुख किसी नाशवान चीज़ से जुड़ा हुआ है वो सुख उन चीज़ों के नष्ट होने पर दम भर में खत्म होकर दुख की सूरत अख्तयार कर लेता है। अगर साईंस की मेहरबानी से मनचाही मादी चीज़ें मिल भी जाएं तो ऐसा सुख कभी प्राप्त नहीं होगा जिसे पूर्ण सुख कहा जा सके और जिसमें किसी चीज़ की कमी का एहसास न रहता हो। आदमी को हज़ार मनचाही चीज़ें और मन चाहे सुख क्यों न हासिल हो जाएं फिर भी किसी न किसी चीज़ की कमी महसूस हो ही जाएगी और फिर उनके हासिल करने की फिकर में मुबतला होना ही पड़ेगा। अगर ऐसा न होता तो बरतानिया, अमरीका, रूस जिन्हें दुनिया के तमाम सुख धन-दौलत वगैरह मयस्सर हैं लेकिन उनमें भूख और भी बढ़ रही है और वो ज्यादा हड़प करने की धुन में नई तैयारियां कर रहे हैं यह कमी साईंस शरणम् गच्छामि से कभी पूरी नहीं हो सकती। माया दम-दम रंग बदलती है, लम्हा बेलम्हा नई-नई सूरतों के साथ सामने आती है। साईंस भी माया का ही रंग है। इस लिए साईंस की इजादात का भी यही हाल है। इनका सिलसिला भी कभी खत्म नहीं हो सकता। एक के बाद दूसरी इजाद की जरूरत पैदा हो जाती

है। अलगर्ज़ साईंस की शरण लेने और इसकी इजादात से फायदा उठाने या मादी चीज़ों से सच्चे सुख की उम्मीद रखने वाले इस जन्म में तो क्या, सौ जन्मों तक भी सच्चे सुख की प्राप्ति नहीं कर सकते। तब फिर सच्चा और लाजवाल सुख कहां प्राप्त होगा? वहां से, जहां इनका अटूट भंडार और लाजवाल खजाना है और वह भंडार या खजाना है इक जोत प्रभु जो पूर्ण आनन्द है, एक रस, एक रंग, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और ज्ञान स्वरूप है जिनकी प्राप्ति होने पर फिर किसी और चीज़ की कमी नहीं रहती और न कोई ऐसा इलम या साईंस जानने को बाकी रहता है क्योंकि यह प्रेम ही तमाम इलमों और कलाओं का मम्बा, तमाम विद्याओं का खज़ाना और हर प्रकार के सुख का सागर है। ज़रा और गौर कीजिये, साईंस की इजादात के बल बूते पर आदमी धर्म को तिलांजलि दे गया है। उसकी गुनाह करने की वृति बढ़ गई है। डाका, कत्लो-खून, चोरी, धोखा, जिन्नाकारी की वारदातें चारों तरफ हो रही हैं। हर तरफ ज़ुल्म और अत्याचार का दौर दौरा है प्रभु की शरण लेने वालों में ऐसा नामुमकिन है। एक लातीनी कहावत है,

खुदा का खौफ अक्लमंदी का पहला असूल है।

प्रभु शरणम् गच्छामि कहने वाले जानदारों को दुख देना पसंद नहीं करते। गुरु नानक देव जी के एक पठान शिष्य थे। वह बाहर जा रहे थे। रास्ते में एक बेल में पैर उलझ गया। आपने वहीं कदम रोक लिया हाथ से बेल को परे हटाया तब कदम आगे रखा और आपके मुतल्लक यह वाणी मशहूर हुई,

हो के पूत पठान के देत दलन को तोड़
शरण आए रघुनाथ की बेल सके न मोड़।

यानि भगवान की शरण आने पर उसका हृदय इतना नर्म हो गया कि जो गिरोह के गिरोह कत्ल करने पर भी अफसोस नहीं करता था अब वह बेल के तोड़ने में असमर्थ है। उसका दिल नहीं चाहता कि एक बेल को भी उससे नुक्सान पहुंचे।

प्रभु शरणम् गच्छामि का अहद लेने की जरूरत

प्रभु और मनुष्य के दरम्यान प्रभु शरणम् गच्छामि का अहद एक ऐसी ज़बरदस्त कड़ी है कि जो इंसान को इस मादी दुनिया में रहते हुए और अपनें तमाम कारोबार सर अन्जाम देते हुए उनसे बेलौस और

उनके असर और नतीजों से बरी रहना सिखाती है मगर अफसोस, आजकल मगरबी तालीम के शैदा नौजवान और साईंसदान प्रभु शरणम् गच्छामि के सही अर्थ और ज्ञान से वाकिफ नहीं। उनके ख्याल में प्रभु और उसकी शरण में जाना, यह चीज़ें इंसान की बुनियादी ज़रूरत में शामिल नहीं बल्कि बाहर से किसी आदमी ने जबरदस्ती ठाँस रखी हैं और यह इंसान की तरक्की में भारी रुकावट साबत होती हैं और अक्सर वहमों पर इनकी बुनियाद है हालाँकि हकीकी और अमली तौर पर यह धारणा सरासर गलत और बेबुनियाद है क्योंकि अपने से किसी बड़ी हस्ती से प्रेम मोहब्बत, कशिश, श्रद्धा और अकीदत का जज़बा और उसको भक्ति में लगे रहने का रुझान और बुलन्द से बुलन्द और तमाम शको-शुभा से ऊपर सच्चे ज्ञान के हासिल करने की धुन हर फरदो-बशर के अन्दर फितरतन (Naturally) मौजूद है।

भगवान खुद मौजूद हैं, इसके लिए सबूत की जरूरत नहीं। वह इन्सान के अंदर रह कर अपनी प्रेरणा से जीवन को विकास देते हैं। इन पर ही ज़िन्दगी की तमाम सरगर्मियां वक्फ हैं। इन्हीं से

ज़िन्दगी की सारी हस्ती (कायनात) कायम है। इन्हीं की शरण में इंसान की हर तरह की तरक्की का राज़ छुपा हुआ है। इन्सान कदम-कदम पर इन्हीं जज़बात और रुझानात से फैज़याब होता है। फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि प्रभु शरणम् गच्छामि का अहद लेने की असली ज़िन्दगी में कोई अहमीयत नहीं। हां, अगर कोई प्रभु शरणम् गच्छामि का अर्थ महज़ यही लगाता है कि किसी मंदिर में या किसी मूर्ति के सामने बैठकर माथा रगड़ा जाए, नाम जपा जाए लेकिन हृदय में छल कपट, बेईमानी, हिंसा वगैरह पापों का चक्कर बराबर चलता रहे या प्रभु को एक रिश्वतखोर अफ्सर समझ कर उसके नाम पर खरायत बांटकर अपनी मनोकामनाओं के पूर्ण होने का ख्वाब देखा जाए तो यकीनन इस तरह से प्रभु शरणम् गच्छामि कहने की कोई अहमीयत या वुक्कत नहीं है। अगर प्रभु शरणम् गच्छामि का मतलब यह है कि दुनिया के झमेलों से तंग आकर बुज़दिलों की तरह ज़िन्दगी के मैदाने अमल से फरारी अख्तयार करें और जंगलों में डेरा जमा लिया जाए या भेखी बन कर किसी से कोई लगाव न रखें या यह मतलब समझना कि गेरुए कपड़े पहन कर

चेले चांटों की फौज भर्ती करें, गुरुडम चलाएं, उपदेश त्याग और तपस्या न करें तो ऐसे प्रभु शरणम् गच्छामि के अहद लेने की किसी जमात, कौम या इंसान को जरूरत नहीं। प्रेम समाज तो प्रभु शरणम् गच्छामि से उस आलमगीर जज़बा का मतलब लेता है जो कुदरतन हर दिल को देखता है और जो ज़िन्दगी को रौशनी और कशिश बक्षता है। इस के तीसरे अहद पर प्रभु शरणम् गच्छामि का मतलब उस हकीकी रौशनी यानि जोत की शरण लेना है जो हर मुश्किल में इसकी तारीकी को मिटाकर सही रहनुमायी करती है।

प्रभु शरणम् गच्छामि से इंसान तेजस्वी और निर्भय हो जाता है

जैसे आग के पास जाकर गर्मी, बर्फ के पास जाकर ठंडक और फूलों को पास रखने से खुश्बू आती है इसी तरह प्रभु की समीपता से मनुष्य तेजस्वी और निर्भय हो जाता है। औरंगज़ेब आलमगीर का एक पेशकार वली राम था। एक दिन गर्मी के मौसम में बादशाह ने उसे दो बजे बुलाया। वली राम सख्त धूप में बादशाह के अस्थान पर पहुंचा। बादशाह किसी

काम में मश्कूल था। उसे वली राम को अंदर बुलाना याद नहीं रहा। एक घण्टा के बाद जब वह सख्त गर्मी के बायस पसीना-पसीना हो गया, तब उसके दिल में ख्याल आया और कुछ कहे बगैर चल दिया। मकान पर आकर वली राम ने अपने नौकर से कहा कि बाज़ार में जाकर ऐलान कर दो कि वली राम अपना सब कुछ दान कर रहा है। चुनांचे एक घण्टे के अन्दर-अन्दर तमाम सामान दान देकर एक लंगोटी पहन कर खुद यमुना के किनारे प्रभु की याद में महव हो गया। उधर बादशाह ने अपना तमाम काम खत्म करके वली राम को बुलाया। अरदली ने कहा कि हजूर वह आया था, घण्टा भर इंतजार करने के बाद वापिस चला गया। जब शाम तक वली राम न आया तो दूसरे दिन बादशाह ने अरदली को कहा कि जाओ वली राम को बुला लाओ। अरदली ने आकर कहा, हजूर वह फकीर हो गया है, अब आपके पास नहीं आएगा। बादशाह ने यह सोचकर कि उसके दिमाग में खलल है, दो-तीन वज़ीरों और हकीम को लेकर यमुना के किनारे पहुंचा और देखा कि वली राम खुदा की याद में मस्त है। जब वली राम ने आंखें खोलीं तो बादशाह ने कहा कि वली

राम मेरे साथ चलो, काम संभालो, मैं आपकी इज़्ज़त करता हूं, कल काम की वजह से तुझे अंदर बुला न सका तो वली राम ने फारसी में जवाब दिया जिसका तर्जुमा यूं है, "ऐ बादशाह, जब मैं तेरी मुलाज़मत में था, घण्टा भर सख्त धूप में खड़ा रहा, अब मैंने तेरी मुलाज़मत छोड़ कर सच्चे बादशाह (खुदा) की खिदमत (भक्ति) करनी शुरू कर दी तो मुझे थोड़े अरसे में यह दर्जा मिला कि तू मेरे पास पैदल चल कर आया। अब आप ही बताइये कि मैं बड़ा हूं या आप बड़े।"

प्रेम समाज के मैम्बर बन गए

मेरी बातें सुन कर वह गम्भीर स्वर में बोले, वाक्या ही मैं गलती पर था। साईंस ने जिस्म और रूह को एक ही समझा हुआ है हालांकि यह दो चीज़ें हैं। साईंस की इजादात और सारे सुख साधन शरीर के लिए हैं आत्मा के लिए नहीं। आत्मा की शान्ति से ही शरीर को प्रसन्नता होती है। इसलिए आत्मा को शांत करना पहला कर्त्तव्य है। मैं आज इस नुक्ता को समझ गया हूं। आत्मा की पवित्रता और शान्ति के लिए प्रभु शरणम् गच्छामि का अहद लेना

बहुत जरूरी है, इस अहद से ही मानव जाति का कल्याण होगा इसका मुझे यकीन हो गया है लिहाज़ा मैं साईंस शरणम् गच्छामि की बजाय प्रभु शरणम् गच्छामि का अहद लेता हूं और गायबाना तौर से श्री बीर जी की रूहानी तालीम का कायल होता हूं। यह कह कर उन्होंने श्री महाराज के फोटो को, जहां से कि इस बात का आगाज़ हुआ था, अकीदतमंददाना प्रणाम करके इस रूहानी बात को समाप्त किया।

—★—

प्रार्थना

ऐ प्रीतम तुम मेहर कमावो
हिरदे सबके साफ बनावो
आपस में सब प्रेम कमावें
लड़ना भिड़ना सकल मिटावें

हरदम तेरा नाम ध्यावें
जो कुछ चाहें सो तुझसे पावें
बलबुद्ध सबको बक्ष स्वामी
तू है दाता अन्तरयामी

तेरी मेहर जभी हो जावे
तब ये दुनिया सब कुछ पावे
नाम तेरे में वड प्रताप
तू है सबका मालिक बाप

मेहर कमावो मेहर कमावो
हृदय निर्मल शुद्ध बनावो

बहुत धर्म कमाई सारे करें
कल्या दुख आवे तो सुख कर जरें

मन्दी इच्छया फुरे न कोई
दगा किसी से करे न कोई

भला जगत में सबका लोड़ें
बदनीतों से रिश्ता तोड़ें

निगाह विशाल बक्शो प्रभु मेरे
सारे हमको ल गें भलेरे

मन्दा कोई नज़र न आवे
सब में तेरा रूप दिसावे

प्रेम शरणम् गच्छामि
धर्म शरणम् गच्छामि
प्रभु शरणम् गच्छामि

K. P. SABHA AMBPHALLA
LIBRARY
No............
Date..........
JAMMU